موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 1

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े—क़िस्त 1

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़तं(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)मं और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें माकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون﴾.

अर्थातःक्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

आखितर के दिन को योमुल मीआ़द इस लिए कहा गया है कि उसके बाद कोई दिन न होगा,वह इस प्रकार कि स्वर्ग वासी अपना स्थान ग्रहण करलेंगे और नरक वासी अपने स्थान पे पहुंच जाएंगे,यह दिन क़यामत के दिन से भी जाना जाता है क्योंकि उस दिन लोग अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे।

ए मोमिनो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में छ कार्य सम्मिलित हैंःसूर में फूंक लगाना,मख्लूक़ो(जीवों)का दोबारा उठाया जाना,क़यामत के अन्य चिंहों का उतपन्न होना,लोगों का ह़शर के मैदान में जमा होना,हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा,स्वर्ग एवं नरक में प्रवेश।

1.अल्लाह के बंदो!सूर में फूंक लगाना क़यामत की विशाल चिन्हों में से प्रथम चिन्ह होगी,इसी के माध्यम से क़यामत के घटित होने की सूचना दी जाएगी,सूर का अर्थ वह सींग है जिसमें सूर के देवदूत–अर्थात इसराफील–दो बार फूंक मारेंगे,प्रथम बार फूंक लगाने से समस्त जीव बेहोश हो जाएंगे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन हैः

﴿وما ينظر هؤلاء إلا **صيحة واحدة** ما لها من فَواق﴾

अर्थातःउन्हें केवल एव चीज की प्रतीक्षा है जिसमें कोई ढील नहीं है।

अर्थातःउसके पश्चात न उन्हें होश आएगा और न वह दुनिया में लौट पाएंगे,फिर द्वितीय बार सूर फूंका जाएगा जिस से समस्त शव उठ खड़े होंगे,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन हैः

﴿فإنما هي زجرة واحدة فإذا هم ينظرون﴾.

अर्थातःवह तो केवल एक जो़र की झिड़की है कि अचानक यह देखने लगेंगे।

ज्ञात हुआ कि प्रथम बार फूंक मारने से जीव मर जाएंगे एवं द्वितीय बार फूंक मारने से शव जीवित हो जाएंगे।

कुरान में सूर को الناقور भी कहा गया है,जैसा कि सूरह **अलमुद्दसिर** में आया हैः

﴿فإذا نقر في الناقور﴾

अर्थातःजब कि सूर में फूंक मारी जाएगी।

2.आखिरत के दिन पर ईमान लाने में क़यामत के विशाल चिन्हों पर ईमान लोने भी शामिल है,जैसे भूमि में भूकंप का आना,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः

﴿إذا زلزلت الأرض زلزالها﴾

अर्थातःजब भूमि पूरी तरह से झिनझोड़ दी जाएगी।

तथा यह किः ﴿إذا رجت الأرض رجا﴾.

अर्थातःजबकि भूमि भूकंप के साथ हिला दी जाएगी।

क़्यामत का एक विशाल चिन्ह यह है कि आकाश फट जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः ﴿فإذا انشقت السماء فكانت وردة كالدِّهان﴾

अर्थातःजबकि आकाश फट कर लाल हो जाए जैसे कि लाल त्वचा।

अर्थातःलाल त्वचा के जैसा हो जाएगा,क्योंकि وردة का अर्थ लाल है और الدِّهانका अर्थ त्वचा होता है।

द्वितीय आयत में अल्लाह ने उस दिन आकाश को तरल वस्तु के समान कहा है,अल्लाह का कथन हैः ﴿يوم تكون السماء كالمهل﴾

अर्थातःजिस दिन आकाश तेल की तेलछट जैसे हो जाएगा।

उस दिन पहाड़ टुकड़े–टुकड़े कर दिए जाएंगे यहां तक कि वे उड़ती रेत के जैसे अथवा धुने हुए उून के जैसे हो जाएंगे।ये दोनों ही विशेषताएं लगभग मिलती जुलती है,पहाड़ के टुकड़े–टुकड़े होने का उल्लेख अल्लाह तआ़ला के इस कथन में हैः ﴿**وبُسَّت الجبال بسا**﴾

अर्थातःपहाड़ के (धुने हुए उून के जैसे हवाओं में)उड़ने का उल्लेख इस आयत में आया हैः ﴿وتكون الجبال **كالعهن المنفوش**﴾

अर्थातःपहाड़ धुने हुए रंगीन उून के जैसे हो जाएंगे।

तथा अल्लाह के इस कथन मेंः ﴿وكانت الجبال **كثيبا مهيلا**﴾.

अर्थातःपहाड़ भुड़भुड़ी रेत के टीलों जैसे हो जाएंगे।

उस दिन पहाड़ों को उनके स्थानों से उखाड़ कर चला दिया जाएगा यहां तक कि वे सराब(वे रेत जो दूर से पानी जैसा लगता है)के जैसे हो जाएंगे,अल्लाह का कथन हैः ﴿وسُيرت الجبال فكانت **سرابا**﴾

अर्थातःपहाड़ चलाए जाएंगे तो वे सराब हो जाएंगे।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وترى الجبال تحسبها جامدة وهي **تمر مر السحاب** صنع الله الذي أتقن كل شيء﴾.

अर्थातःआप पहाड़ों को देख कर अपने स्थान पर स्थिर मानते हैं किंतु वे भी बादल के जैसे उड़ते फिरेंगे।यह है अल्लाह का निर्माण जिसने प्रत्येक वस्तु को मजबूत बनाया है।

क़्यामत का एक विशाल चिन्ह यह है कि सूर्य लपेट लिया जाएगा,अल्लाह का कथन है: ﴿إذا الشمس كورت﴾

अर्थातःजब सूर्य को लपेट लिया जाएगा।

सूर्य को लपेटने का अर्थ यह है कि उसे पगड़ी के जैसे लपेट कर फेंक दिया जाएगा जिस से उसका आलोक समाप्त हो जाएगा।[1]

क़्यामत का एक बड़ा चिन्ह यह भी है कि सितारे टूट जाएंगे,अर्थात आकाश की बोलंदी से टूट कर एक के बाद एक भूमि पर गिर जाएंगे,अल्लाह ने फरमायाः

﴿وإذا النجوم **انكدرت**﴾.

अर्थातःजब सितारे प्रकाशहीन हो जाएंगे।

क़्यामत का एक विशाल चिन्ह यह भी है कि समुद्र में आग का भोंचाल आजाएगा,जैसा कि अल्लाह ने फरमायाः ﴿وإذا البحار **سُجِّرت**﴾

अर्थातःजब समद्र भर जाएंगे।

पवित्र ह वह (अल्लाह) जिसके हाथ में यह शक्ति है कि वह प्रकृति के नियमों को अपने कौनी एवं क़दरी आदेश से उलट–पलट करदेगा,अल्लाह ने फरमायाः

﴿إنما قولنا لشيء إذا أردناه أن نقول له كن فيكون﴾.

अर्थातःहम जब किसी चीज का सोचते हैं तो केवल हमारा यह कह देना होता है कि होजा,और वह हो जाता है।

3.आखिरत के दिन पर ईमान लाने में यह भी सम्मिलित है कि बास बाद अलमौत(मृत्यु पश्चात पुनःजीवित किया जाना) पर ईमान लाया जाए,इस का अर्थ यह है कि जब सूर में द्वितीय बार फूंक मारी जाएगी तो मृत्यु जीवित हो जाएंगे,पुनः जीवित होना सत्य एवं सिद्ध है,इस पर कुरान व हदीस एवं मुसलमानों की सर्व सहमति प्रमाणित हैं,अल्लाह ने फरमाया हैः

﴿ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذَلِكَ لَمَيِّتُون * ثُمَّإِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ **تُبْعَثُون**﴾.

अर्थातःउसके पश्चात फिर तुम सब निसंदेह मर जाने वाले हो।फिर क़्यामत के दिन निसंदेह तुम सब उठाए जाओगे।

---

[1] देखें:तफसीर इब्ने जरीर में उपरोक्त आयत का विवरण।

उस समय लोग अल्लाह के समक्ष खड़े होंगे,नंगे पॉव एवं निर्वस्त्र होंगे,उनका ख्तना नहीं किया होगा,वे सबके सब बिल्कुल सही होंगे,अर्थात संसार में उनके अंदर जो अवगुण थे,वे उनसे पवित्र होंगे,जैसे लंगड़ापन और अंधापन आदि।अल्लाह का कथन है:

﴿كَمَابَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيدُهُ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّافَاعِلِين﴾.

अर्थातःजैसे कि हमने प्रथम बार पैदा किया था उसी प्रकार पुनःकरेंगे।यह हमारे ऊपर वचन है और हम इसे अवश्य करके ही रहेंगे।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.आप जान लें—अल्लाह आप पर कृपा करे—कि आखिरत के दिन पर ईमान लाने का एक तक़ाज़ा यह भी है कि मख़्लूकों(जीवों)को ह़श्र के मैदान(वह स्थान जहां मृत्यु उपरांत सबको जमा किया जाएगा)में जमा करने पर ईमान लाया जाए,ह़श्र का अर्थ है जीवों को उनके कब्रों से उठा कर महशर के मैदान में जमा करना,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है: ﴿وهو الذي ذرأكم في الأرض وإليه **تحشرون**﴾.

अर्थातःवही है जिसने तुम्हें पैदा करके भूमि में फैला दिया और उसी के ओर तुम जमा किए जाओगे।

इब्ने अ़ब्बास रज़ीअल्लाहु अंहुमा से वर्णित है,वह कहते हैंःहमारे बीच नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उपदेश प्रस्तुत करने के लिए खड़े हुए और आपने फरमायाःतुम अल्लाह तआ़ला से इस अवस्था में मिलोगे कि नंगे पॉव,निर्वस्त्र एवं बिना ख्तने होगे।[2]

[2] इसे बोखारी(6526)एवं मुस्लिम(2860)ने वर्णित किया है।

क़्यामत के दिन लोगों को सफेद गंदुमि रंग की(हमवार)भूमि पर जमा किया जाएगा,उसमें किसी भी मनुष्य के लिए कोई सड़क चिन्ह न होगा,[3]एक पुकारने वाले की आवाज़ सबके कानों तक पहुंच सकेगी[4]और एक नजर सबको देख सकेगी।[5]जैसा कि सह़ी बोखारी[6]में अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है।

उस दिन मनुष्यों,जिन्नातों,देवदूतों एवं मवेशियों को **इकट्ठा** किया जाएगा,मनुष्य एवं जिनों के **इकट्ठा** होने का प्रमाण पूर्व आयतों में आए समानता का अर्थ है,रही पशुओं के **इकट्ठा** होने का प्रमाण तो अल्लाह तआ़ला का यह कथन उसका प्रमाण है:

﴿وما من دابة في الأرض ولا طائر يطير بجناحيه إلا أمم أمثالكم ما فرطنا في الكتاب من شيء ثم إلى ربهم يحشرون﴾

अर्थातःजितने प्रकार के जीव पृथ्वी पर चलने वाले हैं और जितने प्रकार के पक्षी जो अपने दोनों पंखों से उड़ते हैं उनमें कोई प्रकार ऐसी नहीं जो कि तुम्हारे प्रकार के दल न हों,हमने पंजी में कोई चीज नहीं छोड़ी,फिर सब अपने रब की ओर जमा किए जाएंगे।

तथा अल्लाह तआ़ला का यह कथन भी इसका प्रमाण है: ﴿وإذا الوحوش حُشرت﴾.

अर्थातःजब वह़शी जानवर **इकट्ठे** किए जाएंगे।

रही बात देवदूतों को **इकट्ठा** करने की तो इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿وجاء ربك والملك صفا صفا﴾

अर्थातःतेरा रब(स्वयं)आ जाएगा और देवदूत पंक्तियों में(आ जाएंगे)।
अतः देवदूत अपने रब के समक्ष पंक्तियों में खड़े होंगे,किंतु उनका हिसाब व किताब न होगा,क्योंकि यह उनके स्वभाव में है कि वे अल्लाह के आदेशों का पालन करते

---

[3] देखें:सह़ी बोखारी(6521)एवं सह़ी मुस्लिम(2790)सहल बिन सअ़द रज़ीअल्लाहु का वर्णन।

[4] क्योंकि पृथ्वी पर कोई एसी दीवार आदि न होगी जो ध्वनी फैलने में बाधा बन सके।

[5] अर्थात पृथ्वी एतनी हमवार होगी कि नजर उनके प्रथम मनुष्य से अंतिम मनुष्य तक पहुंच रही होगी,देखें:फत्हुलबारी,(4712)ह़दीस का विवरण।

[6] ह़दीस संख्याः(3361)

और रब की अवज्ञा नहीं करते हैं,जैसा कि अल्लाह तआ़ाला ने अपने इस कथन में उनकी यह विशषता बताई है: ﴿لا يعصون الله ما أمرهم ويفعلون ما يؤمرون﴾

अर्थातःजो आदेश अल्लाह देता है उसकी अवज्ञा नहीं करते बल्कि जो आदेश दिया जाए उसका पालन करते हैं।

अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने के ये चार तक़ाज़े हैं जिन का उल्लेख हुआ,आखिरत पर ईमान उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि पूर्ण रूप से इन तक़ाजों़ पर ईमान न लाया जाए,पॉचवा एवं छटे तक़ाज़े के विषय में आगामी उपदेशों में चर्चा होगी।इन्शा अल्लाह

*आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके अनुयायियों एवं क़यामत तक सत्य निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह!हमें अपने देशों में शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

*हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हैं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह!हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारो जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्वि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

عباد الله! إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

१५ जुलक़ादा **१४४२**हिजरी

जूबैल–सउूदी अ़रब

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com

موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 2

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े—क़िस्त 2

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـــه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون﴾.

अर्थातःक्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनो! पिछले दो उपदेशों में आखेरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित बात की गई,जो कि यह हैंःसूर में फूंक लगाना,क़यामत की विशाल चिंह,मख्लूकों(जीवों) का दोबारा उठाया जाना,लोगों को महशर के मैदान(जहां मरणोपरांत पुनः **इकट्ठा** किया जाएगा)में जमा करना,और आज हम इन्शा अल्लाह चर्चा करेंगे महशर के मैदान में घटने वाले घटनाओं के कुछ विवरणों के विषय में।
अल्लाह के बंदो!महशर के मैदान में चार चीजें घटित होंगीः
1.लोग घबराए हुए होंगे,इसका प्रमाण सूरह अलहज के आरंभ में अल्लाह तआला का यह कथन हैः

﴿إن زلزلة الساعة شيء عظيم * يوم تروٰنها تذهل كل مرضعة عما أرضعت وتضع كل ذات حمل حملها وترى سكارى وما هم بسكارى ولكن عذاب الله شديد﴾.

अर्थातःनिसंदेह क़यामत का भूकंप बड़ी चीज़ है जिस दिन तुम उसे देख लोगे हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी,और सारे गर्भवतियों का गर्भ गिर जाएंगे और तू देखेगा कि लोग मदहोश दिखाई देंगे,जब्कि वे वास्तव में बेहोश न होंगे लेकिन अल्लाह की यातना बड़ा कठोर है।
उसकी कठोरता एवं क्रूरता का यह आलम होगा कि लोगों की सोच समझ असंतुलित हो जाएगी और उनके लिए यह जानना कठिन हो जाएगा कि वे दुनिया में कितने काल तक रहे,कोई कहेगाः ﴿إن لبثتم إلا **عشرا**﴾

अर्थातःहम तो दुनिया में मात्र दस दिन ही रहे।

और कोई कहेगाः ﴿لبثنا **يوما** أو **بعض يوم** فاسأل العادين﴾

अर्थातःएक दिन अथवा एक दिन से भी कम,गिनती गिनने वालों से भी पूछ लीजिए।
एक अन्य आयत में अल्लाह तआला उनके प्रति फरमाता हैः

﴿ويوم تقوم الساعة يقسم المجرمون ما لبثوا غير **ساعة**﴾.

अर्थातःजिस दिन क़यामत आऐगी पापी लोग कसमें खाएंगे कि(दुनिया मेंदुनिया में)एक घड़ी के सिवा नहीं ठहरे।

उस दिन की कठोरता एवं भीषण भयानकता का आलम यह होगा कि लोग एक दूसरे से ग़ाफिल होंगे,अल्लाह का कथन हैः

﴿يوم يفر المرء من أخيه * وأمه وأبيه * وصاحبته وبنيه * لكل امرىء منهم يومئذ شأن يغنيه﴾.

अर्थातःउस दिन मनुष्य अपने भाई से और अपनी माता और पिता से,और अपनी पत्नी और अपनी औलाद से भागंगे।उनमें से प्रत्येक को उस दिन ऐसी चिंता होगी जो उसके लिए प्रयाप्त होगी।

अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन जिन लोगों को घबराहट होगी वे पापी होंगे जैसे काफिर,बिदअ़ति(नवाचारी)और अवज्ञाकारी मोमिन,अल्लाह का कथन है:

﴿وكان يوما على الكافرين عسيرا﴾

अर्थातःयह दिन काफिरों पर बड़ा भारी होगा।

किंतु जो पक्के ईमान वाले होंगे तो वे उससे निर्भय होंगे,वे ऐसे लोग होंगे जिन्होंने अल्लाह की आज्ञा की और अल्लाह के ह़राम किए हुए चीजो से स्वयं को बचाए रखा,अतःजो व्यक्ति संसार में अल्लाह से डरता है,अल्लाह उसे आखिरत में निर्भय कर देगा,और जो व्यक्ति संसार में अल्लाह से निर्भय रहता है,उसे क़्यामत के दिन भयभीत कर देगा,यह अल्लाह तआ़ला के न्याय का तक़ाज़ा है कि वह बंदा को न दोनों संसार में शांति देता है और न दोनों दुनिया में भय में रखता है,अतःजो(स्वयं को)अल्लाह से दुनिया में निर्भय समझे उसे आखिरत के दिन अल्लाह तआ़ला भय में रखता है,अल्लाह तआ़ला सत्य मोमिनों के प्रति फरमाता है:

﴿**لا يحزنهم** الفزع الأكبر وتتلقاهم الملائكة﴾

अर्थातःवह बड़ी घबराहट भी उन्हें उदास न कर सकेगी और देवदूत उन्हें हाथों हाथ लेंगे।

अल्लाह ने अधिक फरमायाः ﴿وهم من **فزع** يومئذ آمنون﴾

अर्थातःवे उस दिन की घबराहट से निर्भय हांगे।

तथा अल्लाह का कथन है: ﴿أفمن يُلقى في النار خير أمَّن يأتي **آمنا** يوم القيامة﴾.

अर्थातः(बतलाओ तो)जो आग में डाला जाएगा वा अच्छा है अथवा जो शांति के साथ क़्यामत के दिन आए?

2.मेह़शर के मैदान में जो घटना घटेंगे उनमें एक यह भी कि सूर्य जीवों से निकट हो जाएंगा,यहां तक कि एक मील की दूरी पर होगा,एक कथन है कि उसका अर्थ सुरमेदानी का मील(सलाई)है,और अन्य कथन है कि उसका अर्थ एक

मील की दूरी है,चाहे इसका अर्थ यह हा अथव वह हर स्थिति में सूर्य सरों से बिल्कुल निकट हो जाएगा।[1]

यदि पूछा जाए किःक्या कोई ऐसा भी होगा जो सूर्य की गर्मी से सुरक्षित रहेगा?तो उत्तर है किःहां,कुछ ऐसे लोग भी होंगे जिन को अल्लाह तआ़ाला उस दिन सूर्य की गर्मी से सुरक्षित रखेगा,उनमें से वे सात प्रकार के लोग होंगे जिन को अल्लाह तआ़ाला अपने(अ़र्श के)छाए में स्थान देगा,उस दिन जब उस(अ़र्श)के छाए के अतिरिक्त कोई छाया न होगा,इसका अर्थ वह छाया है जिसे अल्लाह तआ़ाला पैदा करेगा,वह अ़र्श का छाया होगा,उसके माध्यम से अनेक लोग उस दिन सूर्य से बच जाएंगे,अल्लाह तआ़ाला हमें भी उन स्वभागियों में शामिल फरमाए।वे न्याय प्रिय इमाम होगा,अथवा वह युवा होगा जिसकी जवानी अल्लाह की आज्ञा में गुजरी होगी,दो ऐसे लोग होंगे जिन्हों ने अल्लाह के लिए आपस में प्रेम की होगी,उसी प्रेम के लिए **इकट्ठा** हुए होंगे और उसी प्रेम अलग हुए होंगे,और एक ऐसा व्यक्ति होगा जिस का दिल मस्जिद से लगा रहता ह,मस्जिद के बाहर आने से ले कर वापस जाने तक मस्जिद से ही उसका दिल अटका होता है,और एक वह व्यक्ति होगा जिस ने अकेला में अल्लाह को याद किया होगा और उसकी आंखें बह पड़ी होंगी, और वह व्यक्ति जिसे किसी पद वाली एवं खांदानी सुन्दर युवती ने अपने साथ पाप करने का न्योता दिया होगा किंतु उसने यह कह कर टाल दिया होगा किः(में अल्लाह से डरता हूं)और एक वह व्यक्ति होगा जिसने एतना छिपा कर सदका़(दान)किया होगा कि दाएं हाथ से जो कुछ खर्च किया,बाएं हाथ को भी उसकी भनक न लगी होगी।[2]

3.ह़शर के मैदान में जो दृश्य होंगे,उन में यह भी है कि लोग पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाज़(कुंड)पर आएंगे जो मह़शर के मैदान में होगा,उससे वे मोमिन बंदे सैराब होंगे जो इस्लाम पर स्थिर रहते हैं,और उस हो़ज़ से दो प्रकार के लोगों को दूर भगा दिया जाएगाःएक वे जो इस्लाम लाने के पश्चात मुर्तद(नास्तिक)हो गया,जैसे वे लोग जो पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मृत्यु के पश्चात मुर्तद हो गए,और उन्हीं के जैसे वे लोग भी होंगे जो क़यामत तक इर्तेदाद(नास्तिकता)के शिकार होंगे।द्वितीय प्रकार बिदअ़तियों(नवाचारों)की होगी,चाहे को़लो(कथनी)बिदअ़त हो

---

[1] देखेंःसही़ मुस्लिम(2864)

[2] इस ह़दीस को बोखारी(660)और मुस्लिम(1013)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।

अथवा अ़मली(कार्य),उन्हें भी ह़ौज़ से दूर रखा जाएगा जैसे अनरिचित ऊंटनी को पनघट से दूर भगाया जाता है।[3]

उस ह़ौज़ में स्वर्ग की कौसर नहर से दो प्रणाले गिर रहे हैं,कौसर का अर्थ होता है अति अच्छाई एवं भलाई,उस ह़ौज़ की लंबीई एक महीने की दूरी के बराबर है,उस पर आकाश के सितारों की संख्या में पियाले हैं,उसका पानी दूध से अधिक सफेद है,उसकी खुशबू मुश्क से अधिक उत्तम है,उसका स्वाद मधु से अधिक मीठा है,तो व्यक्ति एक बार उसको पीलेगा उसे कभी प्यास नहीं लगेगी,उसमें स्वर्ग से दो प्रणाले गिर रहे हैं,एक सोने का और दूसरा चांदी का,उसकी चौड़ाई उसकी लंबाई के जैसा है,जितनी सना और मदीना के बीच की दूरी है।[4]

अल्लाह के बंदो!नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ह़ौज़ अभी भी अस्तित्व में है,जैसा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कथन हैःअल्लाह की क़सम!में अभी भी अपने ह़ौज़ को देख रहा हूं।[5]

ह़ौज़ के प्रति एक रिवायत यह भी है कि प्रत्येक संदेशवाहक का एक ह़ौज़ है,जैसा कि पैगन्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"क़यामत के दिन प्रत्येक पैगंबर के लिए एक ह़ौज़ होगा,और वे आपस में एक दूसरे पर गर्व करेंगे कि किस के ह़ौज़ पर पानी पीने वालों की अधिक भीड़ होगी,और मुझे आशा है कि मेरे ह़ौज़ पर(अल्लाह के कृपा से)सबसे अधिक लोग जमा होंगे"।[6]

यह अल्लाह तआ़ला की नीति एवं बंदों के प्रति उसकी दया का एक दृश्य है,ताकि पूर्व(मिल्लतों के)मोमिन भी उन पैगंबरों के ह़ौज़ से सैराब हो सकें जिनका उन्हों ने अनुगमन किया,ताकि उनको पूरा पूरा बदला मिले।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित

---

[3] देखें:सह़ी मुस्लिम(2302)

[4] ह़ौज़ से संबधित आई ह़दीस के लिए देखें:"सह़ बोखारी",किताबुल रिक़ाक़,अलह़ौज़ खण्ड में,इसी प्रकार से"सह़ी मुस्लिम",किताबुल फज़ाइल,खण्ड इस्बाते ह़ौज़े नबीयेना(सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)व सिफातेहि।

[5] इसे बोखारी(6590)और मुस्लिम(2296)ने उ़क़्बा बिन आ़मिर रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

[6] इसे ह़दीस को तिरमिज़ी(2443)ने सुमरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है और अल्बानी ने इसे सह़ी कहा है जैसा कि"अस्सह़ीह़ा"(1589)में है।

फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.आप जान लें—अल्लाह आप पर कृपा करे—कि क़्यामत के दिन ह़श्र के मैदान में जो दृश्य होंगे उनमें शिफाअ़ते उ़ज़मा(भव्य अनुशंसा)भी होगी,वह इस प्रकार कि क़्यामत के दिन सारे लोग,चाह वे मोमिन हों अथवा काफिर,बहुत दैर तक खड़ो रहेंगे,अतः(थक हार कर)पैगंबरों के पास जाएंगे कि वे उनके रब के पास हिसाब व किताब को आरंभ करने की अनुशंसा करें,ताकि सारे लोग अपनी अपनी मंजिल तक पहुंच सकें,अथवा तो स्वर्ग की नेमत(आशीर्वादों)में जाएं अथवा नरक में,किंतु पॉच संदेशवाहक उनसे क्षमा लेलेंगेःआदम,नूह़,इब्राहीम,मूसा एवं ईसा अलैहिमुस्सलाम,फिर ईसा अलैहिस्सलाम उनको मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास भेजेंगे,अतःवे आपके पास जाएंगे और फरमाएंगेः(में अनुशंसा के लिए आया हूं)।फिर आप अ़र्श के नीचे स्जदे में गिर जाएंगे और जब तक अल्लाह चाहेगा आप स्जदा ही में रहेंगे,फिर अल्लाह तआ़ला आपको अपनी प्रशंसा एवं उत्तम स्तुति के शब्दों का इल्हाम करेगा जो आप से पूर्व किसी को नहीं दिए गए,फिर आपसे कहा जाएगाः(ए मोह़म्मद!अपना सर उठाओ,जो कहो वह सुना जाएगा,जो मांगो वह प्रदान किया जाएगा,जो अनुशंसा करो स्वीकार किया जाएगा),फिर आप अल्लाह के निकट मह़शर के मैदान में खड़े हुए बंदों के लिए हिसाब व किताब की सिफारिश करेंगे,अतःअल्लाह तआ़ला आपकी सिफारिश स्वीकार फरमा कर हिसाब व किताब को आरंभ करेगा आर अपने बंदों के समक्ष निर्णय करेगा,चाहे वे मोमिन हों अथवा काफिर,आदम से लेकर क़्यामत होने तक के(समस्त बंदों का निर्णय करेगा)।

यही वह शिफाअ़त(अनुशंसा)है जिसे अल्लाह तआ़ला के इस कथन में मक़ामे मह़मूद (प्रशस्त स्थान)कहा गया हैः (عسى أن يبعثك ربك مقاما محمودا)

अर्थातःनिकट ही आपका रब आपको मक़ामे मह़मूद में खड़ा करेगा।

वह ऐसा स्थान है जिस पर पदस्थापित होने के पश्चात क़यामत के दिन समस्त पूर्व एवं पश्चात में आने वाले लोग आपकी प्रशंसा करेंगे और उसके कारण आप पर ईर्ष्या करेंगे,क्योंकि हिसाब व किताब को आरंभ करने में समस्त मख़लूक़ों(जीवों)पर आप का कृपा होगा,चाहे वे मोमिन हों अथवा काफिर,मनुष्य हो अथवा जिन्न।
इस शिफाअ़त(अनुशंसा)के महत्व के कारण विद्धानों ने इसे शिफाअ़ते उ़ज़मा(भव्य अनुशंसा)का नाम दिया है,और क़यामत के दिन की जाने वाली यह र्स्वप्रथम शिफाअ़त होगी।
ए अल्लाह के बंदो!ये चार कार्य जिनका उल्लेख हुआ,क़यामत के दिन ह़श्र के मैदान में घटित होने वाले दृश्य हैं,मुस्लिम बंदे को चाहिए कि स्वेद इन दृश्यों को सामने रखे ताकि अल्लाह का भय बना रहे,फलस्वरूप पुण्य के कार्यों के लिए त्यार हो और अल्लाह तआ़ला को नाराज़ करने वाले कार्यों से स्वयं को बचाके रखे।

*आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके अनुयायियों एवं क़यामत तक सत्य निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह!हमें अपने देशों में शांति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

*हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हैं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं काय से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह!हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है आर हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारी जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्वि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

عباد الله! إن الله يأمر بالعدل والإحسان وإيتاء ذي القربى، وينهى عن الفحشاء والمنكر والبغي، يعظكم لعلكم تذكرون، فاذكروا الله العظيم يذكركم، واشكروه على نعمه يزدكم، ولذكر الله أكبر، والله يعلم ما تصنعون.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

२२जुलक़ादा **१४४२**हिजरी

जूबैल–सउूदी अ़रब

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान हि़फजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com

موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 3

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षकः

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े–क़िस्त 3

प्रथम उपदेशः

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचातः

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

अल्लाह के बंदो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन

आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون﴾.

अर्थातःक्या तुम यह सोचते हो कि हमन तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनों!पिच्छले दो उपदोशों में आखिरत पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित चर्चा की गई,जो कि यह हैंःसूर में फूंक मारना,क़यामत की विशाल चिन्हें,मख़्लूक़ों(जीवों)को पुणः उठाया जाना,लोगों को महशर के मैदान में जमा करना,और आज हम इन्शा अल्लाह जज़ा व सज़ा एवे हिसाब व किताब के विषय में चर्चा करेंगे।

1—अल्लाह के बंदो!हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा सत्य हैं जो कुरान व ह़दीस एवं मुस्लमानों की र्स्वसम्मति से सिद्ध हैं,इसके सिद्ध होने का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है: ﴿إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ * ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا **حِسَابَهُمْ**﴾

अर्थातःनिसंदेह हमारी ओर उन को लौटना है,फिर निसंदेह हमार ऊपर उनसे ह़िसाब लेना है।

तथा अल्लाह का यह कथन भी इसका प्रमाण है:

﴿مَن جَاء بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا وَمَن جَاء بِالسَّيِّئَةِ فَلاَ **يُجْزَى** إِلاَّ مِثْلَهَا وَهُمْ لاَ يُظْلَمُونَ﴾

अर्थातःजो व्यक्ति पुण्य का काम करेगा उसको उसके दस गुणा मिलेंग,और जो व्यक्ति पाप का कार्य करेगा,उसको उसके समान ही दंड मिलेगी और उन लोगों पर अन्याय न होगा।

1.और अल्लाह का यह कथन भी इसका प्रमाण है:

﴿وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ فَلا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئا وَإِن كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا وَكَفَى بِنَا **حَاسِبِين**﴾

अर्थातःक़यामत के दिन हम बीच में ला रखेंगे ठीक ठीक तौलने वाली तराजू।फिर किसी पर कुछ भी अन्याय न किया जाएगा,और यदि एक राई के दाने के समान भी अ़मल होगा हम उसे उपस्थित करेंगे,और प्रयाप्त हैं हिसाब करने वाले।

2.हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा(पुण्य एवं पाप का बदला)अल्लाह की नीति का तक़ाज़ा भी है,क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने पुस्तकें उतारीं,संदेशवाहकों को भेजा,और

बंदों पर यह फर्ज़ कर दिया कि वे उन संदेशवाहकों के लाए हुए संदेश को स्वीकार करें,जिस पर अ़मल करना अनिवार्य है,उस पर अ़मल करें,तथा अल्लाह के मार्ग में रोड़े एवं बाधा डालने वालों से युद्ध करना अनिवार्य है,उनका,उनकी संतान का और उनकी पत्नियों का रक्त एवं उनके धन को ह़लाल(वैध)बनाया,यदि हिसाब व किताब एवं जज़ा व सज़ा(उपकार एवं दंड)न होता तो यह शरीअ़त बेकार एवं व्यर्थ होती जिस से नीति वाला पालनहार पवित्र एवं उच्च है।

3.अल्लाह के बंदो!हिसाब व किताब दो प्रकार के हैं:एक हिसाब व किताब जो केवल(कार्यों की)प्रस्तुति से निहित होगी।दूसरा हिसाब व किताब जिसमें पूछ गछ एवं यातना होगा,उसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है:क़्यामत के दिन जिसके भी हिसाब में खोद कुरेद की गई उसको निश्चित रूप से यातना मिलेगी।

अ़यशा रज़ीअल्लाहु अंहा ने कहाःए अल्लाह के रसूल!क्या अल्लाह तअ़ाला ने स्वयं नहीं फरमायाः «فأما من أوتي كتابه بيمينه * فسوف يحاسب حسابا يسيرا»

कि"जिसका नामाए अ़माल(कार्य सूची)उसके दाएं हाथ में दिया गयाा तो जल्द ही उससे एक आसान हिसाब लिया जाएगा"।उस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि यह तो केवल प्रस्तुति होगी।(अल्लाह तअ़ाला के कहने का तात्पर्य यह है कि)क़्यामत के दिन जिस के भी हिसाब व किताब में खोद कुरेद की गई उसको निश्चित रूप से यातना मिलेगी।[1]

इन दोनों प्रकार के हिसाब व किताब का उल्लेख इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अन्हुमा की इस ह़दीस में आया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः

अल्लाह तअ़ाला मोमिन को अपने निकट बोला लेगा और उस पर अपना पर्दा डाल देगा[2]और उसे छुपा लेगा।अल्लाह तअ़ाला उससे फरमाएगाःक्या तुझको अमुक पाप याद है?क्या अमुक पाप तुझको याद है?वह मोमिन कहेगा हां,ए मेरे रब।अतः जब वह अपने पापों को स्वीकार करलेगा और वह सुनिश्चित हो जाएगा कि अप वह बर्बाद हो गया तो अल्लाह फरमाएगा कि में ने दुनिया में तेरे पापों पर पर्दा डाला।और आज भी में तुझे क्षमा प्रदान करता हूं,अतःउसे उसके पुण्यों की पुस्तक दे दी जाएगी।[3]

---

[1] इसे बोखारी(6537)और मुस्लिम(2876)ने आयशा नज़ीअल्लाहु अंहा से वर्णित किया है।

[2] अपना पर्दा डाल देगा,एक कथन यह है किःअपना कृपा एवं दया से उसे ढ़ांप लेगा।देखें:"अलनेहाया"

[3] इसे बोखारी(2441)और मुस्लिम(2768)ने वर्णित किया है।

2. 4—उस दिन लोगों के अ़माल(कार्यों)तराजू में तौले जाएंगे ताकि लोगों के सामने अल्लाह तआ़ला का न्याय प्रकट होसके,अल्लाह का कथन है:

﴿ونضع الموازين القسط ليوم القيامة فلا تظلم نفس شيئا وإن كان مثقال حبة من خردل أتينا بها وكفى بنا حاسبين﴾.

अर्थातः क़्यामत के दिन हम सामने ला रखेंगे ठीक ठीक तौलने वाली तराजू।फिर किसी पर कुछ भी अन्याय नहीं किया जाएगा,और यदि एक राई के दाने के बराबर भी अ़मल(कार्य)होगा हम उसे उपस्थित करेंगे,और हम प्रयाप्त हैं हिसाब करने वाले।

- यदि कोई यह प्रश्न किः पुण्य एवं पाप कैसे नापे जाएंगे जबकि वे मानवी(अस्पृश्य)वस्तु हैं?

तो इसका उत्तर यह है किः अ़माल(कार्यों)अल्लाह की ईच्छा से शारीरिक वस्तु में परिवर्तित हो जोएंगे,इसी प्रकार कार्यों के अतिरिक्त अन्य चोजें भी शारीरिक वस्तु का रूप धार लेंगे,उदाहरण स्वरूप मृत्यु को लेलें,वह एक अस्पृश्य वस्तु है,स्पृश्य नहीं,किन्तु क़्यामत के दिन उसे एक मेंढ़े के रूप में लाया जाएगा और स्वर्ग एवं नरक के बीच उसकी हत्या कर दी जाएगी,फिर पुकारा जाएगाः ए स्वर्ग वालो!तुमको स्वेद रहना है कभी मृत्यु नहीं है और नरक वालो!तुमको स्वेद रहना है कभी मृत्यु नहीं है।[4]

- और यदि कोई यह प्रश्न करे कि क्या समस्त मोमिनों एवं काफिरों के अ़माल(कार्यों)को तौला जाएगा,अथवा केवल मोमिनों के कार्यों को?तो इसका उत्तर यह है किः आखिरत में केवल मोमिनों के कार्यों को ही तौला जाएगा,अतः यदि मोमिन के नामाए अ़माल(कार्य सूची)में पाप नहीं पाए गए तो उसे आरंभ ही में स्वर्ग में दाखिल कर दिया जाएगा,और यदि उसके नामाए अ़माल में पाप पाए गए तो उसे उन पापों की यातना दी जाएगी,उसके पश्चात अल्लाह तआ़ला उसे स्वर्ग में दाखिल करदेगा,अथवा आरंभ ही में उसे क्षमा प्रदान कर देगा और बिना किसी यातना के स्वर्ग में दाखिल कर देगा,जिसक कारण अथवा शिफाअ़त(परामर्श)करने वालों का परामर्श होगा अथवा मात्र अल्लाह का कृपा एवं दया होगा।रही बात काफिर की तो उसके अ़मलों का नहीं तौला जाएगा,क्योंकि अल्लाह तआ़ला उसके कार्यों का बदला दुनिया ही में स्वास्थ्य अथवा जीविका में बढ़ोतरी आदि करके देदेता है,किन्तु जब आखिरत में अल्लाह के सामने होगा तो उसके लिए नरक की यातना के अतिरिक्त कुछ

[4] देखें:सह़ी बोखारी(4730)और मुस्लिम(2849)।

और न होगा,चाहे उसने दुनिया में कितनी ही भलाई एवं पुण्य ही क्यों न किए हों,जैसा कि अल्लाह का कथन है:

﴿أولئك الذين ليس لهم في الآخرة إلا النار وحبِط ما صنعوا فيها وباطل ما كانوا يعملون﴾

अर्थातःहां यही वे लोग हैं जिन के लिए आखिरत में सिवाए आग के और कुछ नहीं और जो कुछ उन्हों ने यहां किया होगा वहां सब बैकार है और जो कुछ उनके कार्य थे सब बरबाद होने वाले हैं।

तथा अल्लाह ने फरमायाः ﴿وقدمنا إلى ما عملوا من عمل فجعلناه هباء منثورا﴾

अर्थातःऔर उन्हों ने जो जो कार्य किए थे हम ने उनकी ओर बढ़ कर उन्हें बिखरे हुए धूल एवं गर्दों के जैसा बना दिया।

अल्लाह ने और यह भी फरमायाः

﴿مثل الذين كفروا بربهم أعمالهم كرماد اشتدت به الريح في يوم عاصف لا يقدرون مما كسبوا على شيء﴾

अर्थातःउन लागों का उदाहरण जिन्हों ने अपने पालने वाले से कुफ किया,उनके कार्य उस राख के जैसे हैं जिस पर आंधी वाले दिन तेज़ हवा चले।जो भी उन्हों ने किया उसमें से किसी भी चीज पर समर्थ न होंगे।

एक और स्थान पर अल्लाह ने फरमायाः

﴿والذين كفروا أعمالهم كسراب بقيعة يحسبه الظمآن ماء حتى إذا جاءه لم يجده شيئا﴾

अर्थातःऔर काफिरों के आ़माल(कार्यें)उस चमकती हुई रेत के जैसे हैं जो चटयल मैदान में हो जिसे प्यासा व्यक्ति दूर से पानी समझता है किन्तु जब उसके निकट पहुंचता है तो उसे कुछ भी नहीं पाता।

सार यह कि काफिरों एवं मोनाफिकों(कपठियों)का हिसाब व किताब पापों एवं पुण्य में तुलना के लिए न होगा,बल्कि उनसे उनके पापों को स्वीकार कराया जाएगा और उनको डांटा फिटकारा जाएगा,जैसा कि इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस में गुजरा,अतःउनसे उनके कार्यों को स्वीकार कराया जाएगा और उन्हें उनसे अवगत कराया जाएगा,यदि उन्हों ने अस्वीकार तो उनके शरीर के अंग उनके विरुद्ध गवाही देंगे,फिर भरे भीर में उन्हें पुकार कर कहा जाएगाः

﴿هؤلاء الذين كذبوا على ربهم ألا لعنة الله على الظالمين﴾

अर्थातःये वे लोग हैं जिन्होंने अपने परवरदिगार पर झूट कहा,सचेत रहो कि निर्दयों पर अल्लाह की लानत(श्राप)है।

उसके पश्चात उन्हें नरक में ढ़केल दिया जाएगा,अल्लाह का शरण।इससे यह ज्ञात होता है कि अल्लाह तआ़ला मोमिन के पापों पर पर्दा डाल देगा और काफिरों को(सरेआम)अपमानित करेगा।

5.मोमिनो!हिसाब व किताब का एक दृश्य यह भी होगा कि लोगों को जब हिसाब व किताब के लिए बोलाया जाएगा तो वे उदासी एवं निराशा से घुटनों के बल गिर जाएंगे,अल्लाह तआ़ला ने सूरह अलजासिया में फरमायाः

﴿وترى كل أمة **جاثية كلُّ أمة جاثية كل أمة تُدعى إلى كتابها** اليوم **تجزون** ما كنتم تعملون * هذا كتابنا ينطق عليكم بالحق إنا كنا نستنسخ ما كنتم تعملون﴾

अर्थातःऔर आप देखेंगे कि प्रत्येक उम्मत घुटनों के बल गिरी होगी।प्रत्येक समूह अपने नामाए आ़माल की ओर बोलाए जाएंगा,आज तुम्हें अपने किए का बदला दिया जाएगा।यह है तुम्हारी पुस्तक जो तुम्हारे प्रति सत्य सत्य बोल रही है,हम तुम्हारे कार्यों को लिख्वाते जाते थे।

ए मोमिनो!स्र्वप्रथम बंदा से नमाज़ के प्रति हिसाब लिया जाएगा,यदि नमाज़ सही रही तो उसके समस्त कार्य सही होंगे,और यदि उसमें गड़बड़ी पाई गई तो समस्त कार्य बिगड़े हुए होंगे।

6.मानवों के अधिकारों में बंदा से रक्त के संबंध में स्र्वप्रथम हिसाब लिया जाएगा,इसका प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह ह़दीस है:"क़यामत क दिन स्र्वप्रथम लोगों में रक्त का निर्णय किया जाएगा"।[5]

7.उस दिन मनुष्य यदि अपने बुरे कार्यों का इन्कार करेगा,तो उसके शरीर के अंग उसके विरुद्ध गवाही देंगे,अतःउसके कान,उसकी ऑखें और उसका त्वचा उसके विरुध गवाही देंगे,अल्लाह का कथन है:

﴿ويوم يحشر أعداء الله إلى النار فهم يوزعون * حتى إذا ما جاءوها **شهد عليهم سمعهم وأبصارهم وجلودهم بما كانوا يكسبون** * وقالوا لجلودهم لم شهدتم علينا قالوا أنطقنا الله الذي أنطق كل شيء وهو خلقكم أول مرة وإليه ترجعون﴾

[5] इसे बोखारी(6533)और मुस्लिम(1678)ने इब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अन्हुमा से वर्णित किया है।

अर्थातःऔर जिस दिन अल्लाह के शत्रु नरक के ओर लाए जाएंगे और उन(सब)को जमा कर दिया जाएगा।यहां तक कि जब बिल्कुल नरक के निकट आजाएंगे और पर उनके कान और उनकी ऑखें और उनके त्वचे उनके कार्यों की गवाही देंगी।यह अपने त्वचों से कहेंगे कि तुम ने हमारे विरुद्ध गवाही क्यों दी,वे उत्तर देंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की शक्ति पदान की जिसने प्रत्येक वस्तु को बोलने की शक्ति प्रदान की है,उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया और उसी के ओर तुम सब लौटाए जाओगे।

ह़सन बसरी अल्लाह के इस कथनः(كفى بنفسك اليوم عليك حسيبا)की व्याख्या में फरमाते हैंःए इब्ने आदम!तेरे रचनाकार ने तेरे साथ न्याय किया,तेरी हस्ती को ही तेरा समीक्षक बना दिया।इब्ने जरीर त़बरी ने अपनी तफसीर के अंदर उपरोक्त आयत की व्याख्या में क़तादा का यह कथन अंकित किया है किःउस दिन वह भी पढ़ने लगेगा जो दुनिया में पढ़ना नहीं जानता था।

8.ए मुसलमानो!उस दिन सत्तर हजार लोग हिसाब व किताब से अपवादित होंगे,उनसे न हिसाब व किताब होगा और न उन्हें यातना दी जाएगी—अल्लाह तआ़ला हमें भी उनमें सम्मिलित फरमाए—वे पक्के ईमान वाले होंगे,जिन्हों ने वे समस्त आज्ञा का पालन किया जो अल्लाह ने उन पर अनिवाय किया,पुण्य एवं भलाई के कार्यों में जल्दो की,वर्जित एवं अनुचित कार्यों से बचे रहे।

अबू अमामा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस में इस बात का प्रमाण है कि उस प्रभुता से सम्मानित होने वाले लोगों की संख्या इससे अधिक होगी,आप रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"मेरे रब ने मुझसे वादा किया है कि वह मेरी उम्मत में से सत्तर हजार लोगों को स्वर्ग में दाखिल करेगा,न उनका हिसाब होगा और न उन पर कोई यातना,(फिर)प्रत्येक हजार के साथ सत्तर हजार होंगे,और उनके अतिरिक्त मेरे रब की **मुठ्ठियों** में से तीन **मुठ्ठियों** के बराबर भी होंगे"।[6]

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

---

[6] इसे तिरमिज़ी इत्यादि ने वर्णित किया है,और उपरोक्त शब्द तिरमिज़ी के हैंः(2437),इसकी सनद को अल्बानी रहीमहुल्लाहु ने सही कहा है,जैसा कि "अस्सह़ीहा"में है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

9.अल्लाह आप पर कृपा करे!आप जान लें कि हिसाब व किताब मनुष्य एवं जिन्नात दोनों में सम्मिलित है,क्योंकि जिन्नात भी संदेशवाहण की समानता के संबोधित हैं,जैसा कि ज्ञात है,वह भी (शरीअ़त के)मोकल्लफ हैं,अल्लाह तआ़ला फरमाता हैः

﴿قال ادخلوا في أمم قد خلت من قبلكم من **الجن** والإنس في النار﴾

अर्थातःअल्लाह तआ़ला फरमाएगा कि जो समुदाय तुम से पश्चात गुजर चूके हैं जिन्नों में से भी एवं मनुष्यों में से भी,उनके साथ तुम भी नरक में जाओ।

तथा अल्लाह तआ़ला स्वर्ग के हूरो के प्रति फरमायाः ﴿لم يطمثهن إنس قبلهم ولا **جان**﴾

अर्थातःइससे पहले किसी मनुष्य अथवा जिन्न ने उनको हाथ नहीं लगाया।

यह आयत साक्ष्य है कि स्वर्ग में जिन्न भी होंगे जो मनुष्यों के जैसे उसमें प्रवेश करेंगे,जब उन्हों ने संदेशवाहकों का कहा माना होगा।

10.अल्लाह के बंदो!उस दिन अल्लाह तआ़ला पशुओं को एक दूसरे से क़िसास(बदला)दिलाएगा,अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"(क़यामत के दिन)हक़दारों को उनका पूरा पूरा अधिकार दिया जाएगा,यहां तक कि सींग वाली बकरी से बिना सींग वाली बकरी का बदला लिया जाएगा"।[7]

मतलब यह कि बिना सींग की बकरी का क़िसास उस सींग वाली बकरी से लिया जाएगा जिसने उसे सींग मारा होगा,पवित्र है वह अल्लाह जिसने अपने न्याय एवं नीति से हमारे बुद्धियों हो हैरान कर दिया।

ए अल्लाह के बंदो!ये वे दस चीजे हैं जो क़यामत के दिन के हिसाब व किताब एवंज जज़ा व सजा पर ईमान लोने में शामिल हैं,अल्लाह तआ़ला हमें उन लोगों में शामिल फरमाए जो अपना नामाए आ़माल(कार्य सूची) दाएं हाथ से प्राप्त करें और उनका हिसाब व किताब आसान होगा।

*आप यह भी जान लें–अल्लाह आप पर कृपा करे–कि शुक्रवार के दिन और रात में आपका सर्वश्रेष्ठ कार्य यह है कि आप नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजें,हे अल्लाह!अपने दास एवं संदेशवाहक मोह़म्मद पर दरूद नाज़िल कर,आपके उत्तराधिकारी

[7] इसे मुस्लिम(2582)ने रिवायत किया है।

से प्रसन्न होजा,जो सत्य मार्ग पर स्थिर एवं मुसलमानों के ईमाम थे,तथा उनके अनुयायियों एवं क़यामत तक सत्य निष्ठा के साथ उनका अनुगमन करने वालों से प्रसन्न होजा।

*हे अल्लाह!इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर,बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,और अपने धर्म की रक्षा कर,हे अल्लाह! इस्लाम एवं मुसलमानों को सम्मान एवं प्रतिष्ठा प्रदान कर, बहुदेववाद एवं बहुदेववादियों को अपमानित करदे,तू अपने और इस्लाम के शत्रुओं को नाश करदे,और अपने एकेश्वरवाद बंदों की सहायता फरमा।

*हे अल्लाह!हमें अपने देशों में शाति का जीवन प्रदान कर,हे अल्लाह!हमारे इमामों एवं हमारे शासकों को सुधार दे,उन्हें हिदायत का निदेशक एवं हिदायत पर चलने वाला बना दे।

*हे अल्लाह!समस्त मुस्लिम शासकों को अपनी पुस्तक को लागू करने,अपने धर्म को उच्च करने की तौफीक़(शक्ति)प्रदान कर और उन्हें अपने प्रजाओं के लिए कृपा का कारण बना।

*हे अल्लाह!हम तुझ से दुनिया एवं आखिरत की समस्त भलाई की प्रार्थना करते हैं जो हमको मालूम है और जो नहीं मालूम,और हम तेरा शर्ण चाहते हैं दुनिया एवं आखिरत की समस्त बुराइयों से जो हमको मालूम है और मालूम नहीं।

*हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।

*हे अल्लाह!हमारे रोगियों को स्वास्थ्य प्रदान कर,हमारे मृतकों पर कृपा फरमा एवं हम में से जो संकट ग्रस्त हैं,उन्हें मुक्ति प्रदान कर।

*हे अल्लाह!हमारे धर्म को सुधार दे,जो हमारे(दीन व दुनिया के)प्रत्येक कार्य की रक्षा का माध्यम है और हमारी दुनिया को सुधार दे जिस में हमारी जीविका है और हमारी आखिरत को सुधार दे जिसमें हमारा(अपने गंतव्य की ओर)लौटना है और हमारे जीवन को हमारे लिए प्रत्येक भलाई में वृद्वि का कारण बना दे और हमारी मृत्यु को हमारे लिए सब विपत्तियों से छुटकारा बना दे।

*हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई दे और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

- اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه وسلم تسليما كثيرا.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफज़ुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com

موضوع الخطبة : **مقتضيات الإيمان باليوم الآخر – جزء 4**

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي/ حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم :طارق بدر السنابلي(@Ghiras_4T)

शीर्षक:

प्रलय के दिन पर विश्वास करने हेतु आवश्यकताएं।

भाग: ०४ (स्वर्ग की विशेषताएं)

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـــه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे दुष्ट चीज़ धर्म में अविष्कार किए गए नवोन्मेष हैं प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है, हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से भयभीत रहो एवं उसका डर अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो, उसके आज्ञाकार बने रहो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, ज्ञात रखो कि अल्लाह तआ़ला अपने विधान में, अपने भाग्य (वितरण करने) में और अपने बदले एवं यातना में सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान है एवं अल्लाह तआ़ला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उसने अपने सृष्टि हेतु एक समय स्थित किया है जिसमें उन्हें

उन कर्मों का बदला देगा जिन को अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से उन पर अनिवार्य किया, अल्लाह तआ़ला का कथन है :

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون * فتعالى الله الملك الحق﴾.

अर्थात: क्या तुम्हें यह भ्रम है कि हमने तुम्हें निरर्थक पैदा किया है एवं यह की तुम हमारी ओर नहीं लौटाए जाओगे?

ए मोमिनो! पूर्व के उपदेशों में प्रलय के दिन पर विश्वास करने हेतु आवश्यकताओं के संबंध में कुछ बातें वर्णित की गईं जो तुरही फूंकने, सर्वश्रेष्ठ क़यामत के लक्षण, सृष्टि के उठाए जाने, न्याय के मैदान में मनुष्यों के एकत्रित होने एवं लाभ-व-यातना (जैसी बातों) आधारित पर थीं, एवं आज हम इन्-शा-अल्लाह स्वर्ग से संबंधित कुछ बातों का उल्लेख करेंगे जिसको अल्लाह तआ़ला ने मोमिनों हेतु तैयार किया है:

१. स्वर्ग एवं नरक में विश्वास रखना प्रलय के दिन पर विश्वास रखने में सम्मिलित है, और ये दोनों सृष्टि का शाश्वत निवास है, स्वर्ग आनंदो का गृह है, इसे अल्लाह तआ़ला ने उन विश्वासियों एवं धर्मनिष्ठ मनुष्यों हेतु तैयार किया है जिन्होंने हर उस आदेश पर विश्वास किया जिन पर अल्लाह ने विश्वास करना अनिवार्य किया है, इसी प्रकार उन्होंने अल्लाह एवं उसके दूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञाकारीता की, एवं स्वर्ग के अंदर विभिन्न प्रकार की ऐसी ऐसी विलासिताएं हैं जिनको न किसी नेत्र ने देखा, न किसी कान में सुना एवं ना ही किसी के हृदय पर उसके संबंध में कोई विचार आया, अल्लाह का कथन है :

﴿إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّـــالِحَاتِ أُوْلَئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ * جَزَاؤُهُمْ عِندَ رَبِّهِمْ جَنَّاتُ عَدْنٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا رضِيَ اللَّهُ عَنْهُمْ وَرَضُوا عَنْهُ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهُ﴾

अर्थात: नि: संदेह जिन्होंने विश्वास किया एवं पुण्य-कर्म किए, यही सर्वश्रेष्ठ मनुष्य हैं, उनका बदला उनके पालनहार के निकट शाश्वत स्वर्ग हैं, जिनके नीचे दरिया बह रही है।, अल्लाह तआ़ला इनसे प्रसन्न हुआ और यह अल्लाह से प्रसन्न हुए, यह उसके लिए है जो अपने पालनहार से भयभीत रहे।

इसके अतिरिक्त अल्लाह के कथन है :

﴿فَلا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّا أُخْفِيَ لَهُم من قُرَّةِ أَعْيُنٍ جَزَاء بِمَا كَانُوا يَعْمَلُون﴾ .

अर्थात: किसी को ज्ञात नहीं जो कुछ हमने उनके नेत्रों के ठंडक हेतु छुपा कर रखा है, यह जो कुछ पुण्य-कर्म करते थे इसी का बदला है।२. ए विश्वासियों की मण्डली! स्वर्ग के १०० स्थान हैं, उ़बादह बिन सामित रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: स्वर्ग के १०० स्थान हैं, हर दो स्थान के बीच एक वर्ष की दूरी है, एवं अ़फ़्फान कहते हैं: उदाहरण स्वरूप आकाश एवं पृथ्वी के बीच की दूरी, और फ़िरदौस सर्वश्रेष्ठ स्थान है, एवं इसी से चार दरिया बहते हैं, एवं सिंहासन (अ़र्श) इसके ऊपर है, इस कारणवश अल्लाह से जब भी मांगो फ़िरदौस मांगो।

(अहमद: ३१६/५, मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसे सहीह कहा है।)

३. ए मुसलमानो! स्वर्ग किसी एक बाग़ीचे का नाम नहीं बल्कि अनेक बग़ीचों है का नाम है, इसी प्रकार इस की विलासिता भी एक समान नहीं बल्कि विभिन्न प्रकार की हैं, एवं स्वर्ग के अंदर स्वर्ग वासी भी अपने पुण्य-कर्मों के आधार पर अलग-अलग स्थानों में होंगे। इस कारणवश दो बाग़ीचे एवं उनके अंदर उपस्थित विलासिता की संपूर्ण सामग्री स्वर्ण की हैं एवं दो बाग़ीचे एवं उनके अंदर

उपस्थित विलासिता की संपूर्ण सामग्री चांदी की हैं, जैसा कि प्रथम २ बाग़चों के संबंध में अल्लाह का कथन है :

﴿ولمن خاف مقام ربه جنتان﴾

अर्थात: उस व्यक्ति के लिए जो अपने पालनहार के समक्ष खड़ा होने से भयभीत हुआ; दो स्वर्ग हैं।

फिर उन दो बाग़ीचों के संबंध में अल्लाह का कथन है जिन का स्थान उपरोक्त दो बाग़ीचों की तुलना में विलासिता के संदर्भ में कुछ कम है :

﴿ومِن دونهما جنتان﴾ .

अर्थात: उनके अतिरिक्त (उन से कम स्थान के) दो स्वर्ग और हैं।

अल्लामा इब्ने जरीर तबरी रहिमहुल्लाह इन दोनों श्लोकों के उल्लेख में अबू मूसा अंशअ़री रज़ि अल्लाहु अन्हू मरफ़ूअ़न रिवायत करते हैं कि स्वर्ण के दो बाग़ीचे अल्लाह से निकट रहने वालों के लिए हैं एवं चांदी के दो बग़ीचे यमीन वालों के लिए हैं,

अब्दुल्लाह बिन क़ैस (अबू मूसा अंशअ़री रज़ि अल्लाहु अन्हू) से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दो बिग़ीचे चांदी के हैं एवं उन दोनों के बर्तन व अन्य सामग्री भी चांदी के होंगे, दो बिग़ीचे स्वर्ण के हैं एवं उन दोनों के बर्तन व अन्य सामग्री भी स्वर्ण के होंगे, सदैव वाले स्वर्ग में स्वर्ग वासी एवं उनके पालनहार के भेंट के कुछ भी ओट नहीं होगा, परंतु सर्वोच्च पालनहार के मुखड़े पर सर्वोच्चता की चादर अवश्य होगी"। (बुख़ारी: ७४४४, मुस्लिम: १८०)

अल्लाह के दासो! उचित होगा कि सर्वप्रथम व्यक्तियों एवं यमीन वालों के बीज जो अंतर है उसका उल्लेख कर दिया जाए, तो

सर्वप्रथम व्यक्तियों का अर्थ वह लोग हैं जो अनिवार्य आदेशों एवं नवाफ़िल का कठोरता से पालन करते हैं, एवं अवज्ञा के कार्यों व दुष्कर्मों से वंचित रहते हैं, रही बात यमीन वालों की (जिनको अबरार भी कहा जाता है) तो यह लोग भी अनिवार्य आदेशों का पालन करते हैं एवं दुष्ट कार्य से वंचित रहते हैं किंतु नवाफ़िल का कठोरता से पालन नहीं करते हैं एवं कभी-कभार घृणित (मकरूह) कामों में पड़ जाते हैं, परंतु दोनों प्रकार के लोग अवज्ञा से पूर्णत: वंचित रहते हैं, चाहे उनका संबंध महापापों से हो या फिर छोटे पापों से, और फिर ये सारे व्यक्ति क्षमा प्राप्त करने में शीघ्रता को अपनाते हैं, इस कारणवश इनकी स्थिति पूर्व की तुलना में अधिक उत्तम हो जाती है, फिर भी प्रथम व्यक्तियों की शीलता यमीन वालों की तुलना में हर प्रकार से सर्वोच्च है, सवाब के संदर्भ में अबरार व्यक्तियों की तुलना में प्रथम व्यक्तियों की श्रेष्ठता का कारण प्रसिद्ध है, वह इस कारणवश की प्रथम व्यक्तियों ने अल्लाह की आज्ञाकारी में, अवज्ञा से वंचित रहने में अधिक से अधिक परिश्रम का प्रदर्शन किया है, इसी प्रकार उन्होंने इस्लाम के प्रचार-प्रसार की अनिवार्यता को पूरा करके, लोगों को भलाई का आदेश एवं पापों से वंचित रखने के दायित्व को संभाल कर के, युद्ध एवं दान-पुण्य के माध्यम से, दो (झगड़ते हुए) व्यक्तियों के बीच शांति उत्पन्न करके, मस्जिद के निर्माण एवं पुण्य-कर्मों में बढ़-चढ़ कर भागीदारी ले करके अन्य व्यक्तियों के हित में लाभदायक भी हुए हैं, रही बात अबरार की तो उपरोक्त चीज़ों में प्रथम व्यक्तिगण उनसे कहीं

आगे हैं। अबरार पर प्रथम व्यक्तियों की श्रेष्ठा का एक साक्ष्य यह भी है, अल्लाह तआ़ला का प्रथम व्यक्तियों के संबंध में कथन है :

﴿يحلون فيها من أساور من ذهب﴾

अर्थात: जहां वो स्वर्ण के कंगन पहनाए जाएंगे।

एवं अबरार के संबंध में अल्लाह का कथन:

﴿وحُلُّوا أساور من فضة﴾.

अर्थात: एवं उन्हें चांदी के आभूषण पहनाए जाएंगे।

एवं अल्लाह तआ़ला ने सूरह-ए-वाक़िअ़ह के प्रारंभिक एवं अंतिम भाग में प्रथम व्यक्तियों एवं अबरार व्यक्तियों की विलासिताओं के बीच जो अंतर है उसकी ओर संकेत दिया है।४. अल्लाह के दासो! एक ही विशेषता वाले स्वर्ग वासी भी आपस में विभिन्न स्थानों में होंगे, प्रथम व्यक्तिगण अपने पुण्य-कर्मों के आधार पर अलग-अलग विलासिताओं में होंगे, एवं यही बात यमीन वालों अर्थात अबरार व्यक्तियों के संग होगी, अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: "स्वर्ग वासी अपने से उच्च स्थान वालों की ओर उसी प्रकार देखेंगे जिस प्रकार लोग पश्चिमी या पूर्वी किनारों पर चमकते हुए सितारों को देखते हें, क्योंकि स्वर्ग वासियों का स्थान आपस में आवश्यक रूप से विभिन्न होगा, लोगों ने प्रश्न किया: हे अल्लाह के दूत! ये तो दूतों के अस्थान हैं, इनके स्थान तक कोई नहीं पहुंच सकता? आपने (उत्तर देते हुए) कहा: क्यों नहीं, उस जीव की क़सम जिसके हस्त में मेरा प्राण है! जिन्होंने अल्लाह पर विश्वास किया एवं अपने दूत का सत्यापित किया, (नि: संदेह वो इन स्थानों को प्राप्त कर लेंगे।)"

(बुख़ारी: ३२६५, मुस्लिम: २८३१)

५. ए मुसलमानो! स्वर्ग वासियों की विलासिताएं अधिक से अधिक श्रेष्ठ होती चली जाएंगे, परंतु वे पुरानी नहीं होंगी, अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "स्वर्ग में एक बाज़ार है जिसमें प्रत्येक शुक्रवार को (स्वर्ग वासी) आया करेंगे, उस दिन उत्तर की ओर से ऐसी हवा चलेगी जो उनके मुखड़ो एवं वस्त्रों पर फैल जाएगी, एवं वो लोग सुंदरता में अधिक हो जाएंगे, अपने परिवार के पास लौट कर आएंगे तो वह भी सुंदरता में बढ़े हुए होंगे, उनके परिवार वाले उनसे कहेंगे: अल्लाह की क़सम! हमारे पास से जाने के बाद तुम्हारी सुंदरता अधिक बढ़ गई है, वो कहेंगे: और तुम भी अल्लाह की क़सम! हमारे पीछे तुम लोग भी अधिक सुंदर हो गए हो।

(मुस्लिम: २८३४)

६. ए अल्लाह के दासो! स्वर्ग के श्रेष्ठ विलासिताओं में से स्वर्ग की महिलाएं भी हैं, धार्मिक तथ्य इस बात को दर्शाते हैं कि प्रत्येक विश्वासियों के संग दो हूरें होंगी, साथ ही वो महिलाएं भी जो सांसारिक जीवन में उनकी पत्नियां हुआ करती थीं, एवं अल्लाह तआ़ला विश्वासियों के पुण्य-कर्मों के अनुसार जितना चाहेगा अधिक हूरें प्रदान करेगा, हूर की विलासिता के संबंध में कई एक क़ुरआन के श्लोक एवं नबी के कथन स्थित हैं, उदाहरण स्वरूप अल्लाह का कथन है :

(وَحُورٌ عِينٌ * كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُون)

अर्थात: एवं बड़ी-बड़ी नेत्रों वाली ह़ूरें हैं जो छुपे हुए मोतियों के समान हैं।

सअ़दी का कथन है: "इस श्लोक का अर्थ वह महिलाएं हैं, जिनके नेत्रों में सुरमा होगा, वो अति सुंदर एवं परिचित होंगी, एवं (عِين) **का अर्थ अधिकतम सुंदर एवं बड़ी-बड़ी नेत्र हैं, एवं स्त्रीलिंग की नेत्रों की सुंदरता उनके अति सुंदर होने का साक्ष्य हुआ करती है, एवं अल्लाह का कथन** (كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ): **(जो छुपे हुए मोती के समान हैं) अर्थात: मानो कि वह उजला चमाचम पारदर्शितापूर्ण एवं सुंदर मोतियां हों** (ٱلْمَكْنُون) **,अर्थात: वह अन्य व्यक्तियों के दृष्टि से हवाओं एवं तापमान से सुरक्षित हो, जिसका रंग अत्यंत सुंदर एवं किसी भी प्रकार की त्रुटि ना हो, जिनके अंदर किसी भी प्रकार की कोई कमी ना होगी, बल्कि पूर्णतः गुणवत्ता वाली एवं अति सुंदर होंगी, आप उनके संबंध में जितनी भी बुद्धि लगाएंगे, आपको वही मिलेगा जो आपके हृदय को प्रसन्नता एवं आपके नेत्रों को ठंडक प्रदान करेगा।" सअ़दी रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।**

एक दूसरा श्लोक भी उनकी गुणवत्ता का उल्लेख करता है, अल्लाह का कथन है :

(كأنهن الياقوت والمرجان)

अर्थात: वो ह़ूरें याक़ूत की एवं मूंगे के होंगी।मानो कि वह पारदर्शिता में याक़ूत की तरह एवं उजलेपन में मरजान की तरह होंगी।

)इस सम्मान पूर्वक श्लोक का यह उल्लेख इब्ने जरीर तबरी रहिमहुल्लाह ने इब्ने ज़ैद से रिवायत किया है।(

स्वर्ग वासी महिलाओं के संबंध में अल्लाह का कथन है :

(إِنَّا أَنْشَأْنَاهُنَّ إِنْشَاءً * فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا * عُرُبًا أَتْرَابًا)

अर्थात: हमने (उनकी पत्नियों) को विशेष रूप से बनाया है, एवं हमने उन्हें कवारियां बना दिया है, प्रेम करने वालियों एवं एक ही आयु की हैं।

अल्लाह का कथन (عُرُبًا) **:का अर्थ यह है कि वो अपने पतियों से अत्यंत प्रेम करने वाली होंगी, एवं** (أَتْرَابًا) **अर्थात: सभी का आयु एक ही अर्थात ३३ वर्ष का होगा।**

इसी प्रकार अल्लाह ने उनकी पारदर्शिता का उल्लेख करते हुए फ़रमाया :

(وَلَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَهُمْ فِيهَا خَالِدُون)

अर्थात: उनके लिए स्वच्छता पूर्वक पत्नियां हैं एवं वे उन स्वर्गों में सदैव रहने वाले हैं।

इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन है: "अर्थात वो महिलाएं माहवारी, मल मूत्र एवं प्रत्येक उन चीज़ों से पारदर्शितापूर्ण होंगी जो उनके लिए सांसारिक जीवन में दुखद हुआ करती थीं, इसी प्रकार उनका भीतरी भाग लज्जा से, अपने पतियों की क्रूरता से, उन पर निराधार आरोप लगाने से एवं अपने पतियों के अतिरिक्त अन्य पुरुषों की इच्छा से स्वच्छ होगा।" इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ।

(रौज़तुल्-मुहिब्बीन)

इसी प्रकार अल्लाह ने उनकी एक गुणवत्ता यह बताई कि वह अपने पतियों के अतिरिक्त (अन्य व्यक्तियों से) अपनी निगाहें नीची रखेंगी, अल्लाह का कथन है :

(فِيهِنَّ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ)

अर्थात: वहां (संकोची) नेत्रों वाली हूरें हैं।

इसके अतिरिक्त अल्लाह का कथन है :

(حُورٌ مَقْصُورَاتٌ فِي الْخِيَامِ)

अर्थात: गोरी रंगत की हूरें स्वर्ग के तंबू में रहने वालीयां हैं।

इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन है: "उनका यह गुण कि वह (स्वर्ग के तंबू में रहने वालीयां हैं) अर्थात: वह अपने पतियों के अतिरिक्त किसी अन्य के लिए श्रृंगार नहीं करेंगी बल्कि वो अपने पतियों हेतु ही विशेष होंगी, वह उनके गृहों से बाहर नहीं निकलेंगी, स्वयं को अपने पतियों हेतु इस प्रकार घेर लेंगी कि उनके अतिरिक्त (अपने पास) किसी को फटकने तक नहीं देंगी, अल्लाह पाक ने उन्हें इस प्रकार वर्णित किया है कि (तंबू में रहने वालीयां हैं) यह गुण पूर्व के गुण से कहीं अधिक अच्छा एवं पूर्ण है, इस कारणवश उनमें से एक महिला अपने पति से अथाह प्रेम एवं उनसे अपनी सहमति का प्रदर्शन करने हेतु अपने नयनों को झुकाए रखेंगी एवं उसके अतिरिक्त किसी अन्य पर उसकी निगाह नहीं पड़ेगी।" इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह का कथन समाप्त हुआ। (रौज़तुल्-मुहिब्बीन) नबी की हदीसों में उनकी गुणवत्ता एवं सुंदरता के संबंध में जिन बातों का उल्लेख किया गया है उनसे बुद्धियां अचंभित रह जाती हैं, उदाहरण स्वरूप: अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: सर्वप्रथम मण्डली जो स्वर्ग में प्रवेश करेगी उनके मुख चमकते हुए चंद्रमा की तरह प्रकाशित होंगी, उनके पश्चात जो मण्डली प्रवेश करेगी उनके मुख आकाश में चमकते सितारों की तरह दीप्तिमान होंगे, संपूर्ण के हृदय एक समान होंगे, उनमें आपस

में ना तो घृणा एवं बिगाड़ होगा और ना ही ईर्ष्या द्वेष (ह़सद) एवं

शत्रुता (इ़नाद) होगी, प्रत्येक स्वर्ग वासी हेतु ह़ूर-ए-ईन में से दो पत्नियां होंगी, वह इस प्रकार सुंदर होंगी के उनकी पिंडलियों का गूदा हड्डी एवं मांस के ऊपर से देखा जा सकेगा। (बुख़ारी: ३२४६, मुस्लिम: २८३४)

इब्ने ह़जर रहिमहुल्लाह का कथन है: "ह़ूर वो हैं जिन्हें देखने के पश्चात नयन अचंभित रह जाएंगे, उनके वस्त्रों के पीछे से उनकी पिंडलियों के मांस दिखाई देंगे, देखने वाले को उनके कलेजे में पतले चमड़े एवं अति सुंदर रंगत के कारण अपना मुखड़ा आईने की तरह दिखाई पड़ेगा।"

(फ़तहुल्-बारी)

अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यदि स्वर्ग की महिलाओं में से कोई महिला पृथ्वी की ओर झांके तो आकाश से लेकर धरती तक दीप्तिमान हो जाए, एवं उसे सुगंध से भर दे, उस महिला का दुपट्टा संसार एवं उसमें उपस्थित संपूर्ण चीज़ों से अधिक अच्छा है"।

(बुख़ारी: २७९६)

●लाभ हेतु एक प्रश्न: इब्ने उ़सैमीन रहिमहुल्लाह से प्रश्न किया गया: वह गुण जिनका उल्लेख ह़ूर के लिए किया गया है; क्या वह गुण सांसारिक महिलाओं को भी सम्मिलित हैं?

उत्तर: आप रहिमहुल्लाह उत्तर देते हुए कहा: "जहां तक मुझे लगता है वह यह कि सांसारिक महिलाएं ह़ूर-ए-ईन से भी अधिक श्रेष्ठ हैं यहां तक कि प्रदर्शित गुणवत्ता में भी"।७. पय भी स्वर्ग की विलासिता को सम्मिलित है, जिनके ४ पाठ हैं, जल, दुग्ध, दारू एवं मधु, ये संपूर्ण पय दरियाओं में बहती हैं, जिनको विश्वासीगण पिएंगे, अल्लाह का कथन है :

(مَّثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ الْمُتَّقُونَ فِيهَا أَنْهَارٌ مِّن مَّاءٍ غَيْرِ آسِنٍ وَأَنْهَارٌ مِّن لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهُ وَأَنْهَارٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشَّارِبِينَ وَأَنْهَارٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى)

अर्थात: उस स्वर्ग की विशेषता जिसका धर्मनिष्ठ व्यक्तियों को वचन दीया गया है, यह है कि उस में जल के दरिया हैं जिसमें गंध नहीं होगा एवं दूग्ध के दरिया हैं जिसके स्वाद में परिवर्तन नहीं हुआ, दारू के दरिया हैं जो पीने वालों हेतु अधिकतम स्वादिष्ट है, एवं मधु के दरिया हैं जो कि स्वच्छ हैं।

जल के संबंध में अल्लाह का कथन (غير آسن) **:इसका अर्थ है: लंबे समय तक पानी के रुकने के कारण उसमें किसी तरह का (गंध) परिवर्तन नहीं होगा, एवं अल्लाह का कथन** (من خمر لذة للشاربين) **:इस श्लोक में इस बात की ओर संकेत है कि स्वर्ग का दारू सांसारिक दारू की तरह कड़वी नहीं होगी बल्कि मिष्ठ होगी इस दारू के संबंध में एक दूसरे श्लोक में है कि इस में** (غول) **नहीं है, अर्थात: इस में कोई ऐसी चीज़ नहीं जो पेट के दु: ख का कारण बने**:

(ولا هم عنها يُنزَفون)

अर्थात: इस दारू के पीने के कारण बुद्धि पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा, एवं अल्लाह का कथन (من عسل مصفى) **:के अंदर इस बात की ओर ध्यान खींचना उद्देश है कि (स्वर्ग का मधु) हर उस गंदगी**

एवं मिलावट से सुरक्षित रहेगा जो समान रूप से सांसारिक मधु में हुआ करती है।

८. खाने एवं फल भी स्वर्ग की विलासिता का पाठ हैं, सहीह हदीस से यह बात सिद्ध है कि सर्वप्रथम स्वर्ग वासियों का सत्कार मछली के कलेजे के किनारे वाले भाग से कराया जाएगा, क्योंकि यह सबसे स्वादिष्ट होता है, और यह अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के स्वतंत्र नौकर सौबान रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस में है: एक यहूदी ज्ञानी रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकट आया एवं उसने परिक्षण लेने हेतु कुछ प्रश्न किया, इस हदीस में आया है कि उस व्यक्ति ने आपसे पूछा: जब वो स्वर्ग में प्रवेश कर जाएंगे तो उन्हें उपहार स्वरूप क्या भेंट दिया जाएगा, (उपहार का अर्थ वह सर्वप्रथम वस्तु है जो अतिथि को प्रेम एवं परिचित का प्रदर्शन करने हेतु भेंट दिया जाता है) तो आप ने उत्तर दिया: मछली के कलेजे का अतिरिक्त भाग, उसने कहा इसके पश्चात उनका भोजन क्या होगा? आपने फ़रमाया: उनके लिए स्वर्ग में बैल वध किया जाएगा जो उसके किनारों में चरता फिरता है। उसने कहा इस (भोजन) पर उसका पय क्या होगा? आपने फ़रमाया उस स्वर्ग के सलसबील नामक फ़ौवारे से... हदीस के अंत तक। (मुस्लिम: ३१५)

स्वर्ग वासियों के खाने एवं फल के संबंध में अनेक साक्ष्य हैं जिनका उल्लेख करने हेतु यहां स्थान नहीं है।

सारांशिक रूप में संपूर्ण विलासिताओं का उल्लेख अल्लाह के इस कथन में है:

(وأمددناهم بفاكهة ولحم مما يشتهون).

अर्थात: हम उनके हेतु फल एवं वांछित मांस की रेल-पेल कर देंगे।

९. ए मोमिनो! प्रलय में स्वर्ग वासी की सर्वश्रेष्ठ विलासिता अल्लाह की दृष्टि है, सुहैब रूमी रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है वह रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप ने फ़रमाया: "जब स्वर्ग वाले स्वर्ग में प्रवेश कर जाएंगे, उस समय अल्लाह तआ़ला कहेगा: तुम्हें कोई चीज़ चाहिए जो मैं तुम्हें अतिरिक्त प्रदान करूं, वे कहेंगे: क्या तूने हमारे मुखड़ो को दीप्तिमान नहीं किया? क्या तूने हमें स्वर्ग में प्रवेश नहीं किया एवं नरक से सुरक्षित नहीं किया? रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: फिर अल्लाह तआ़ला पर्दा उठा देगा, तो उन्हें कोई चीज़ प्रदान नहीं की गई होगी जो उन्हें अपने सर्वोच्च पालनहार की दृष्टि से अधिक प्रिय हो"।

(मुस्लिम: १८१)

ए मुसलमानो! स्वर्ग एवं उसकी विलासिता के संबंध में बातें बहुत हैं, जिसको स्वर्ग एवं स्वर्ग वासियों की विलासिता के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करने की इच्छा हो तो उसे इब्ने क़य्यिम रहिमहुल्लाह की पुस्तक [حادي الأرواح إلى بلاد الأفراح] **:का अध्ययन करना चाहिए।**

अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता

हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد!

प्रशंसा ओं के पश्चात!

ज्ञात रखिए -अल्लाह आप पर कृपा करे- कि मूसा अलैहिस्सलाम ने अपने पालनहार से प्रश्न किया एवं कहा: स्वर्ग में निम्नतम स्तर का (स्वर्ग वासी) कौन होगा? अल्लाह तआ़ला ने उत्तर देते हुए कहा: वह (ऐसा) व्यक्ति होगा जो संपूर्ण स्वर्ग वासी के स्वर्ग में भेज दिए जाने के पश्चात आएगा, तो उसे कहा जाएगा: स्वर्ग में प्रवेश कर ले, वह कहेगा: मेरे पालनहार! कैसे? लोग अपने स्थानों पर स्थित हो चुके हैं, एवं जो कुछ प्राप्त करना था वह कर चुके हैं, तो उसे कहा जाएगा: क्या तुम इससे प्रसन्न हो जाओगे कि तुम्हें संसार के राजाओं में से किसी राजा के देश के समान मिल जाए? वह कहेगा: मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हूं, अल्लाह कहेगा: वह तुम्हारा हुआ, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, फिर इसी के समान और, पांचवी बार वह व्यक्ति (अचानक) कहेगा: मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हो गया, अल्लाह तआ़ला कहेगा यह (संपूर्ण) भी तेरा एवं इसके अतिरिक्त १० गुना भी तेरा, एवं वह सब कुछ भी तेरा जो तेरा मन चाहे, एवं जो तेरे नेत्रों को भाए, वह कहेगा: ए मेरे पालनहार! मैं प्रसन्न हूं, फिर (मूसा अलैहिस्सलाम) ने कहा: ए मेरे पालनहार! वह तो सबसे उच्च स्तर का है, अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया: यही वो व्यक्तिगण है जो मेरी इच्छा हैं, उनके सम्मान

को मैंने अपने हाथों से बोया है एवं उस पर मोहर लगा दी, (जिस के हित में चाहा सुरक्षित कर लिया) (सम्मान) का वह (स्थान) न किसी नेत्र ने देखा ना किसी कान ने सुना एवं न किसी के हृदय में इसके संबंध में विचार आया।

(इस हदीस को मुस्लिम: १८९ ने मुग़ीरा बिन शोअ़बा रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत किया है।)

१०. ए मुसलमानो! स्वर्ग एवं नरक सदैव स्थित रहने वाले हैं, वो ना ही नष्ट होंगे एवं ना ही समाप्त होंगे, इसका साक्ष्य क़ुरआन एवं हदीस के बाह्य ग्रंथ हैं, स्वर्ग में मोमिनों के एवं नरक में काफिरों से सदैव रहने के साक्ष्य क़ुरआन के अंदर कई एक का स्थान पर आए हैं, एवं जिन लोगों ने उनके नष्ट होने की बात की है उनका कथन इतना दुर्बल है कि उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह धार्मिक ग्रंथ के बाह्य अर्थ के विरुद्ध है, एवं अल्लाह तआ़ला ने लोगों को ऐसी बातों से संबोधित किया है जो वो भलीभांति समझ सकते हैं, इस कारणवश ग्रंथों का अवतार जिस प्रकार हुआ है उसी प्रकार बिना किसी परिवर्तन के स्वीकार करना अनिवार्य है।

११. ए विश्वासियों की मण्डली! स्वर्ग और नरक दो ऐसी सृष्टि हैं जो अभी भी स्थित हैं, इसका साक्ष्य अल्लाह का कथन है :

﴿وسارعوا إلى مغفرة من ربكم وجنة عرضها السماوات والأرض أُعدَّت للمتقين﴾

अर्थात: अपने रब की क्षमा की ओर एवं उस स्वर्ग की ओर दौड़ो जिसकी चौड़ाई आकाश एवं पृथ्वी के समान है, जो धर्मनिष्ठ व्यक्तियों हेतु तैयार की गई है।

इस कथन के अंदर साक्ष्य स्वरूप (أُعِدَّتْ) अर्थात "तैयार की गई है"।

एवं हदीस से साक्ष्य: रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बिलाल रज़ि अल्लाहु अन्हू से कहना: मुझे वह पुण्य-कर्म बताओ जो तुमने इस्लाम के स्वीकार करने के पश्चात किया हो, एवं तुम्हारे यहां वह ज़्यादा आशा वाला हो, क्योंकि स्वर्ग में अपने आगे आगे तुम्हारे जूतों की आहट सुनी है।

(इस हदीस को बुख़ारी: ११४९ एवं मुस्लिम: २४५८ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

इसी प्रकार स्वर्ग की सृष्टि एवं वर्तमान काल में इसके स्थित रहने का साक्ष्य रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का यह कथन भी है: (أدخلت الجنة)"अर्थात: "मुझे स्वर्ग में प्रवेश कराया गया, वहां क्या देखता हूं कि मोतियों के गुंबद हैं एवं वहां की मिट्टी कस्तूरी के समान सुगंधित है..."।

(इसरा की हदीस का एक पाठ है जिसे मुस्लिम: १६३ ने अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत है।)

ऐ अल्लाह के दासो! यह वह दस बातें हैं जो स्वर्ग पर विश्वास रखने को सम्मिलित हैं, प्रत्येक विश्वासियों हेतु इन से अवगत होना अनिवार्य है, ताकि स्वर्ग उसकी बुद्धि पर सवार रहे, एवं पुण्य-कर्म करने हेतु सतर्क रहे, एवं अभद्रता व आलस्य से वंचित रहे।

हे अल्लाह! मैं तुझसे ऐसी कथनी और हम करनी (की शक्ति) की मांग करता हूं जो स्वर्ग के निकट कर दे, एवं ऐसी कथनी एवं करने से अपनी शरण में ले ले जो मुझे नरक के निकट कर दे, हे अल्लाह! तू मेरे लिए धर्म को ठीक कर दे जो मेरे धर्म एवं संसार की सुरक्षा का माध्यम है, एवं मेरे सांसारिक जीवन को ठीक कर

दे जिसमें मेरा जीवन है, एवं मेरे प्रलय के दिन को ठीक कर दे जिस में मेरे अपने स्थान की ओर पलटना है, एवं मेरे जीवन को मेरे लिए प्रत्येक भलाई में बढ़ोतरी का कारण बना दे, और मेरे मृत्यु को मेरे लिए प्रत्येक प्रकार की बुराई से संतुष्टि का सामान बना दे।

हे हमारे पालनहार! हमें संसार में पुण्य दे, एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर, एवं हमें नरक की यातना से वंचित रख।

اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

०९६६५०५९६६६१

अनुवादः

तारिक़ बदर

binhifzurrahman@gmail.com

موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 5

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े—क़िस्त 5

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्वारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون﴾.

अर्थातःक्या तुम यह सोचते हो कि हमने तुम्हें यूं ही बेकार पैदा किया है और यह कि तुम हमारी ओर लौटाए ही न जाओगे।

ए मोमिनो!विच्छले दो उपदेशों में आखिरत के दिन पर ईमान लोन के तक़ाज़े के संबंध में चर्चा की गई,जो कि ये हैंःसूर में फूंक मारना,क़्यामत की विशाल चिन्हें,मख्लकों का पुनःउठाया जाना,लोगों को महशर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सज़ा एवं हिसाब व किताब एवं स्वर्ग की नमत,आज हम ईन्शा अल्लाह नरक की विशेषण एवं गुणवत्ता पर चर्चा करेंगे।

1.अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में स्वर्ग एवं नरक पर और इस बात पर ईमान लाना शामिल है कि ये दोनों मख्लूक़(जीव)का स्थायी निवाय हैं,अतःस्वर्ग नमत(आशीर्वाद)का घर है जिसे अल्लाह ने मोमिन एवं मुत्तक़ी(धार्मिक)बंदों के लिए तैयार किया है,और नरक यातना का घर है जिसे अल्लाह तआ़ला ने दो प्रकार के लागों के लिए तैयार किया हैःकाफिर और वह मोमिन जो कबीरा गुनाह(विशाल पाप)को करते हैं।

2.ए मोमिनो!नरक में जाने वाले मोमिनों देने में अल्लाह की नीति यह है कि उन्हें पापों से पवित्र किया जा सके,उसके पश्चात अल्लाह तआ़ला उन्हें स्वर्ग में प्रवेश प्रदान करेगा,इस लिए वहां केवल पवित्र हसतियां ही प्रवेश करेंगी,और पाप गन्दगी एवं अपवित्रता से निर्मित है,इस लिए पहले इन पापों से पवित्र करना वाजिब(अनिवार्य)है,यह अल्लाह पाक की नीति है,किंतु अल्लाह तआ़ला बड़े पाप करने वाले एकेश्वरवाद बंदों को क्षमा प्रदान करके उन्हें बिना किसी यातना के भी स्वर्ग में दाखिल कर सकता है,अल्लाह का कथन हैः

﴿إن الله لا يغفر أن يُشرك به ويغفر ما دون ذلك لمن يشاء﴾

अर्थातःनिसंदेह अल्लाह तआ़ला अपने साथ शरीक किए जाने को क्षमा नहीं करता और उसके अतिरिक्त जिसे चाहे क्षमा प्रदान करता है।

अतःअल्लाह तआ़ला जिसे क्षमा करदे,तो यह उसका कृपा है,और जिसे यातना दे,तो यह उसका न्याय है,रही बात काफिर की तो उसे यातना में डालने में अल्लाह की नीति यह है कि उसी अपमानित किया जाए,इस यातना का **उद्देश्य** उसकी पवित्रता नहीं

होती,क्योंकि ख़बासत(गंदगी)उसके आंतरिक में जड़ जमा चुकी होती है,जो आग से भी दूर नहीं होगी,इस लिए वह स्वेद ही नरक में रहेगा,अल्लाह की शरण।[1]

3.नरक में अनेक प्रकार की यातना होगी,जो हमारे विचार एवं सोच में भी नहीं आ सकती,अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّا أَعْتَدْنَالِلظَّالِمِينَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا وَإِنيَسْتَغِيثُوا يُغَاثُوا بِمَاء كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوهَ بِئْسَالشَّرَابُ وَسَاءتْ مُرْتَفَقًا﴾

अर्थातःनिश्चय हमने अत्याचारों के लिये ऐसी अग्नि तैयार कर रखी है जिस की प्राचीर(वह दीवार जो नरक के चारो ओर बनाई गई है)ने उन को घेउ लिया है,और यदि वह(जल के लिए)गुहार करेंगे तो उन्हें तेल की तलछट के समान जल दिया जायेगा जो मुखों को भून देगा,वह किया ही बुरा पेय है!और वह किया ही बुरा विश्राम है।!

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿إِنَّاللَّهَ لَعَنَ الْكَافِرِينَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيرًا * خَالِدِينَفِيهَا أَبَدًا لاَّ يَجِدُونَ وَلِيًّا وَلا نَصِيرًا * يَوْمَتُقَلَّبُ وُجُوهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُولُونَ يَا لَيْتَنَاأَطَعْنَا اللَّهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُولا﴾

अर्थातःअल्लाह ने धिक्कार किया है काफिरों को।और तैयार कर रखी है उनके लिए दहकती अग्नि।वे सदावासी होंगे उस में।नहीं पायेंगे कोई रक्षक और न कोई सहायक।जिस दिन उलट पलट किये जायेंगे उन के मुख अग्नि में,वे कहेंगेःहमारे लिये क्या ही अच्छा होता की हम कहा मानते अल्लाह का तथा कहा मानते रसूल का!।

4.ज्ञात हुआ कि काफिर स्वेद के लिए नरक में रहेंगे,किंतु पापी मोमिनों को—यदि अल्लाह ने क्षमा नहीं किया किया—तो एक निश्चित समय तक उसमें यातना चखेंगे,अपने किये हुए पापों के बराबर यातना पाएंगे,जैसे जीभ के पाप,अथवा योनी के पाप,अथवा परिजनों से संबंध तोड़ना,अथवा ह़राम(गाने एवं बातें)सुन्ना,अथवा ह़राम चीज की ओर देखना,अथवा ह़राम धन खाना इत्यादि,अतःसज्दा के स्थानों को आग नहीं छू सके गी,इससे नमाज़ का स्थान स्पष्ट होता है,उनमें से किसी के टखने तक अग्नि पहुंचेगी तो किसी के घुटने तक,किसी की कमर तक पहुंचे गी,जहां नाड़ा बांधा जाता है,और उनमें से किसी की हंस्ली की **हड्डी** तक।[2]इसका अर्थ वह **हड्डी** है जो हलक़ और

---

[1] देखें:"अज़वाउल बयान"में सूरह अलजासिया की इस आयत की व्याख्या﴿ولهم عذاب مهين﴾:आयतः9

[2]इसे मुस्लिम(2845)ने सुमरा बिन जुन्दुब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित किया है।

गरदन के बीच में होती है,यह इस बात का प्रमाण है कि कठोरता एवं सुगमता के रूप से उनकी यातना विरुद्ध होगा,अतःजब वह अपनी यातना चख लेंगे तो उन्हें नरक से निकाल लिया जाए जबकि वह जल कर काला हो चुके होंगे,उसके बाद उन्हें स्वर्ग के प्रारंभिक भाग में स्थित एक नहर डाला जाएगा,जिसे आबे ह़यात(अमृत)कहा जाता है,अतःवह ऐसे वृद्धि पाएंगे जिसे प्राकृतिक बीज पानी के बहाउ में उगता है।[3]जब पापी मोमिन अपने पापों से पवित्र होजोएंगे तब उन्हें स्वर्ग में प्रवेश किया जाएगा।

5.नरक का आकार बहुत बड़ा है,उसका दृश्य भ्यावक और उसकी झुलस बहुत कठोर है,उसके आकार के बड़े होने का प्रमाण अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस है,वह फरमाते हैं:उस दिन नरक को इस अवस्था में लाया जाएगा कि उसमें सत्तर हजार लगाम लगे होंगे,हर लगाम को सत्तर हजार देवदूत पकड़ कर घसीट रहे होंगे।[4]

6.उसका दृश्य भ्यावक होगा,यह अल्लाह तआ़ला के इस फरमान से ज्ञात होता है:

﴿إنها ترمي بشرر كالقصر﴾

अर्थातःवह (अग्नि) फेंकती होगी चिंगारियां भवन के समान।

ज्ञात हुआ कि नरक की चिंगारियॉ अपने आकार में महल के समान है,(आयत में अंकित शब्द) قصرة,قصر का बहुवचन है,जिसका अर्थ वृक्ष के जड़ होते हैं,[5]अतःनरक से उड़ने वाली चिंगारियॉ वृक्ष की जड़ों के समान होगी,हम अल्लाह का शरण चाहते हैं।

7.उसकी झुलस के भीषण ताव का प्रमाण पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यह हदीस है:"तुम्हारी दुनिया की अग्नि नरक की अग्नि का सत्तरवॉ(70)अंश है,पूछा गयाःए अल्लाह के रसूल!यह दुनिया की अग्नि ही प्रयाप्त थी।आपने फरमायाःवह अग्नि इस पर उन्हत्तर(69)गुना अधिक कर दी गई है और इसका प्रत्येक भाग दुनिया की अग्नि के जितना गर्म है।[6]

8.ए मुसलमानो!नरक के सात द्वार हैं,उनमें से प्रत्येक द्वार क लिए लोगों का एक विशेष एवं ज्ञात भाग बटा हुआ है,अल्लाह का कथन है:

---

[3] देखें:सह़ी बोखारी(7439,7437)और मुस्लिम(182)जिसे अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु ने रिवायत किया है।

[4] देखें:सह़ी मुस्लिम(2724),यह कथन मरफू ह़दीस के स्थान में है,जैसा कि ह़दीस का ज्ञान रखने वाले इससे अवज्ञत हैं।

[5] देखें:तफसीर इब्ने जरीर त़बरी में उपरोक्त आयत की व्याख्या।

[6] इसे बोखारी(3265)और मुस्लिम(2843)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द बोखारी के हैं।

﴿وإن جهنم لموعدهم أجمعين * لها سبعة أبواب لكل باب منهم جزء مقسوم﴾.

अर्थातःऔर वास्तव में उन सब के लिये नरक का वचन है।उस(नरक)के सात द्धार हैं,और उन में से प्रत्येक द्धार के लिये एक विभाजित भाग है।

9.नरक वासियों के खाने भी उनके श्रेणी के अनुरूप भिन्न भिन्न होंगे,क्योंकि नरक वासियों की यातना उनके पापों के अनुरूप मात्रा एवं गुणवक्ता में एक दूसरे से भिन्न होगा,कुछ नरक वासियों का खाना पीप होगा।अल्लाह का कथन है:

﴿ولا طعام إلا من غسلين﴾

अर्थातःऔर न कोई भाजन,पीप के सिवा।

ग़िसलीन का अर्थ नरक वासियों के घावों से बहने वाला पीप है।

कुछ नरक वासियों का खाना कांटे वाले वृक्ष होंगे,अर्थात सूखे कांटे वाले पौधे होंगे,अल्लाह ने फरमायाः ﴿ليس لهم طعام إلا من ضريع﴾.

अर्थातःउनके लिये कटीली झाड़ के सिवा कोई भोजन सामग्री नहीं होगी।

कुछ नरक वासियों का खाना थूहर का वृक्ष होगा,अल्लाह फरमाता है:

﴿إن شجرة الزقوم * طعام الأثيم * كالمهل يغلي في البطون * كغلي الحميم﴾

अर्थातः

ज़क़्कूम वह पैड़ है जो नरक की जड़ से निकलता है,और देखने और खाने में बहुत खराब होता है,अल्लाह का फरमान है:

﴿أذلك خير نزلا أم شجرة الزقوم * إنا جعلناها فتنة للظالمين * إنها شجرة تخرج في أصل الجحيم * طلعها كأنه رؤوس الشياطين * فإنهم لآكلون منها فمالئون منها البطون﴾

अर्थातःक्या यह अतिथ्य उत्तम है अथवा थोहड़ का वृक्ष।हम ने उसे अत्याचारियों के लिये एक परीक्षा बनाया है।वह एक वृक्ष है जो नरक की जड़(तह)से निकलती है।उसके

गुच्छे शैतानों के सिरों के समान हैं।तो वह(नरकवासी)खाने वाले हैं उस से।फिर भरने वाले हैं उस से अपने पेट।

10.जहां तक नरक वासियों के पेय की बात है तो उन्हें गर्म पानी पिलाया जाएगा और उनके सरों पर बहाया जाएगा,इसके माध्यम से उन्हें शरीर के **बाह्य** भागों को भी यातना दी जाएगी और पेट के आंतरिक भागों को भी,जिस से उनकी खालें गल जाएंगी और आंतें कट जाएंगी,अल्लाह ने फरमायाः

﴿فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من نار يُصب من فوق رؤوسهم الحميم * يُصهر به ما في بطونهم والجلود﴾

अर्थातःतो इन में से काफिरों के लिये ब्योंत दिये गये हैं अग्नि के वस्त्र,उन के सिरों पर धारा बहायी जायेगी खौलते हुये पानी की।जिस से गला दी जायेंगी उन के पेटों के भीतर की वस्तुयें और उनकी खालें।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः ﴿وسُقوا ماء حميما فقطع أمعاءهم﴾

अर्थातःतथा पिलाये जायेंगे खौलता जल जो खण्ड–खण्ड कर देगा उन की ऑतों को।

नरक वासियों की यातना के लिए पेयों के और भी प्रकार होंगे जिन की ओर अल्लाह तआ़ला ने अपने इस कथन में इशारह किया हैः

﴿هذا فليذوقوه حميم وغسَّاق * وآخر من شكله أزواج﴾

अर्थातःयह है।तो तुम चखो खौलता पानी तथा पीप।तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनायें।

ग़स्साक़ के अर्थ हैंःनरक वासियों की खालों से पहने वाली पीप।

11.क़्यामत के दिन तीन प्रकार के लोगों को सबसे कठोर यातना दी जाएगी,वे तीन प्रकार के लोग ये हैंःफिरऔन और उसके अनुयायी,बनु इसराइल में से वे लोग जिन्हों ने कुफ किया,और मोनाफेक़ीन(पाखंडिया),इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह फरमान हैः

﴿ويوم تقوم الساعة أدخلوا آل فرعون أشد العذاب﴾

अर्थातःजिस दिन क़यामत आयेगी(फरमान होगा कि)फिरऔनियों को सबसे कठोर यातना में डालदो।

तथा अल्लाह तआ़ला ने बनी इसराइल के प्रति फरमायाः

﴿فمن يكفر بعد منكم فإني أعذبه عذابا لا أعذبه أحدا من العالمين﴾

अर्थातःफिर उसके पश्चात भी जो कुफ्र(अविश्वास)करेगा,तो मैं निश्चय उसे दण्ड दूँगा,ऐसा दण्ड कि संसार वासियों में से किसी को वैसा दण्ड नहीं दूंगा।

और अल्लाह तआ़ला ने मोनाफिक़ों(पाखंडियों)के विषय में फरमायाः

﴿إن المنافقين في الدَّرْك الأسفل من النار﴾

अर्थातःनिश्चय मोनाफिक़(द्विधावादी)नरक की सब से नीची श्रेणी में होंगे।

12.क़यामत के दिन सबसे हलके(और कम)यातना वाला व्यक्ति होगा जिस के पांव के नीचे दो अंगारे रखे जाएंगे जिनके कारण उसकी बद्धि खौल रहा होगा।[7]

13.सारे के सारे लोग नरक से गुजरेंगे,चाहे वह मोमिन हो अथवा काफिर,जैसा कि अल्लाह का कथन हैः ﴿وإن منكم إلا واردها كان على ربك حتما مقضيا﴾

अर्थातःऔर नहीं है तुम में से कोई परन्तु वहां गुजरने वाला है,यह आप के पालनहार पर अनिवार्य है जो पूरा हो कर रहेगा।

किंतु जिन मोमिनों को अल्लाह तआ़ला मुक्ति देना चाहेगा,उन्हें अग्नि छू भी नहीं सके गी,बल्कि वह उसके ऊपर(पुल)सरात से गुजर जाएंगे और अग्नि उन्हें नहीं छू सके गी,किंतु अल्लाह तआ़ला जिसे यातना देना चाहे गा,चाहे वह पापी मोमिन हो अथवा काफिर,तो पुल सरात से लगे हुऐ आंकड़े(कांटेदार कील)उसे उचक लेंगे और नरक में डाल देंगे,किंतु मोमिनों को उनके पापों के बराबर ही नरक की यातना दी जाएगी,उसके पश्चात उन्हें वहां से निकाल कर स्वर्ग में प्रवेश कर दिया जाएगा,किंतु काफिरों को स्वेद के लिए नरक में ही रहना होगा,उपरोक्त आयत के अंत में अल्लाह तआ़ला के इस कथन का यही अर्थ हैः ﴿ثم ننجي الذين اتقوا ونذر الظالمين فيها جِثيا﴾

[7] इसे बोखारी(6561)और मुस्लिम(213)ने उ़समान बिन बशीर से वर्णित किया है।

अर्थातःफिर हम उन्हें बचा लेंगे जो डरते रहे,तथा उस में छोड़ देंगे अत्याचारियों को मुंह के बल गिरे हुये।

आयत में आए शब्द جِثيا के अर्थ हैंःघुटनों के बल गिरना,जो कि बैठने के जैसा है,क्योंकि मनुष्य घुटनों के बल उसी समय बैठता है जब उसे पर कोई संकट आती है।[8]

14.नरक वासियों को अत्यंत प्यास की स्थिति में नरक की ओर हांक कर लाया जाएगा,अल्लाह का कथन हैः ﴿ونسوق المجرمين إلى جهنم وِردا﴾

अर्थातःतथा हांक देंगे पापियों को नरक की ओर प्यासे पशुओं के समान।

आयत में आए शब्द وِرد का मूल अर्थ हैःजल के निकट आना,चूंकि जल के मनुष्य प्यास के कारण ही आता है,इस लिए यहां प्यासी समूह पर शब्द وِرد को लाया गया है।

15.उस दिन नरक वासियों के कुछ चिन्ह होंगी जिन से देवदूत उन्हें पहचान लेंगे,जब उन्हें पहचान लेंगे तो उन्हें उनके ललाटों एवं परों से पकड़ कर पूरी शक्ति एवं कठोरता के साथ नरक में फेंक देंगे,अल्लाह की शरण।अल्लाह का कथन हैः

﴿يُعرف المجرِمون بسيماهم فيؤخذُ بالنواصي والأقدام﴾

अर्थातःपहचान लिये जाएंगे अपराधी अपने मुखों से,तो पकड़ा जायेगा उन के माथे के बालों और पैरों को।

يُدَعُّونका अर्थ हैःपूरे शक्ति एवं निदयता के साथ उन्हें नरक में प्रवेश किया जाएगा।

16.नरक वासियों को एक यातना यह भी दी जाएगी कि उन्हें मुंह के बल अग्नि में घसीटा जाएगा,जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फरमायाः

﴿يوم يُسحبون في النار على وجوههم ذوقوا مسَّ سقر﴾

[8] देखें:तफसीर इब्ने जरीर में उपरोक्त आयत की व्याख्या।

अर्थातःजिस दिन वे घसीटे जोयेंगे यातना में अपने मुखों के बल(उन से कहा जायेगा कि)चखो नरक की यातना का स्वाद।

नरक वासियों की एक यातना यह भी होगी कि उन्हें अग्नि का वस्त्र पहनाया जाएगा, जैसा कि इस आयत में इसका उल्लेख है: ﴿فالذين كفروا قطعت لهم ثياب من نار﴾

अर्थातःतो उन में से काफिरों के लिए ब्योंत दिये गये हैं अग्नि के वस्त्र।

तथा उन्हें पीतल का वर्स्त्र अग्नि में लपैट कर पहनाया जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन है: ﴿سرابيلهم من قَطِران﴾

अर्थातःउनके वस्त्र तारकोल के होंगे।

سرابيل का अर्थ होता है:क़मीज, قَطران का अर्थ अग्नि में पिघलाया हुआ पीतल है।

नरक वासियों एक यातना यह भी दी जाएगी कि उन्हें लोहे की हथोड़ी से मारा जाएगा,जैसा कि अल्लाह का कथन है: ﴿ولهم مقامع من حديد﴾

अर्थातः

مقامع, مقمعة का बहुवचन है,जो भाला के जैसा लोहे का एक हथियार है जिस से हाथी के सर पर मारा जाता है,आयत में इस का अर्थ लोहे का बड़ा हथोड़ा है,जिस से नरक के दारोगे नरक वासियों को मारेंगे।अल्लाह की शरण।

17.नरक (की अग्नि)—अल्लाह हमें इस से सुरक्षित रखे—देखती और करोध से बिफरती है,धाड़ती और चिंघाड़ती है,इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है:

﴿إذا **رأتهم** من مكان بعيد سمعوا لها **تغيظا وزفيرا**﴾

अर्थातःजब वह उन्हें दूर स्थान से देखेगी,तो सुन लेंगे उस के कोध तथा आवेग की ध्वनि को।

मतलब यह कि नरक की अग्नि काफिरों को ह़श के मैदान में देखे गी तो वे उसके बिफरने की आवाज सुनेंगे,अर्थात उसके खौलने की आवाज,तथा उसके धाड़ने की आवाज और चिंघाड़ने की आवाज सुनेंगे,ये दो प्रसिद्ध ध्वनि है,किंतु उनकी स्थिति को अल्लाह तआ़ला ही जानता है,अल्लाह का कथन है:

(إذا ألقوا فيها سمعوا لها **شهيقا** وهي تفور * تكاد تميز من الغيظ)

अर्थातःजब वह फेंके जायेंगे उस में तो सुनेंगे उस की दहाड़ और वह खौल रही होगी।प्रतीत होगा कि फट पड़गी कोध से।

मतलब यह कि वह करोध से फटने जैसा हो रहा होगा,अल्लाह की शरण।

18.नरक की अग्नि भड़कती और बुझती है,अल्लाह का कथन है: ﴿كلما خَبت زدناهم سعيرا﴾.

अर्थातःजब भी वह बुझने लगेगा तो हम उसे और भड़का देंगे।

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

19.आप पर अल्लाह कृपा करे!अल्लाह तआ़ला ने यह वादा किया है कि नरक को भर देगा,अल्लाह का कथन है: ﴿ولكن حق القول مني لأملأن جهنم من الجنة والناس أجمعين﴾.

अर्थातःपरन्तु मेरी यह बात सत्य हो कर रही कि में अवश्य भरूंगा नरक को जिन्नों तथा मानव से।

20.अल्लाह के बंदो!नरक एक मख़्लूक़(जीव)है(जो अभी भी अस्तित्व में है),इसका प्रमाण अल्लाह का यह कथन है: ﴿واتقوا النار التي أُعدَّت للكافرين﴾

अर्थातःतथा अल्लाह और रसूल के आज्ञाकारी रहो,ताकि तुम पर दया की जाये।

इस आयत में जो तर्क का बिंदु है वहः﴿أعدت﴾ है।(अर्थात तैयार की गई)

ह़दीस से इस का साक्ष्य यह है कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अ़म बिन लोह़य को देखा कि वह नरक में अपनी एड़ियां घसीट रहा था।वह प्रथम व्यक्ति था जिसने इब्राहिम धर्म में परिवर्तन किया और अ़रब द्वीप में मूर्ति पूजा को पचलित किया।[9]

और एक महिला को आपने एक बिल्ली के कारण नरक की यातना में देखा,जिसे उसने बांध रखा था,उसे खिलाया नहीं,और उसको छोड़ा भी नहीं कि पृथ्वी के कीड़े मकोड़े खालेती।[10]

अल्लाह के बंदो!ये बीस चीज़े जिनका उल्लेख हुआ,वे नरक एवं स्वर्ग की विशेषताओं पर ईमान लाने से संबंधित हैं,प्रत्येक मोमिन को चाहिए कि इन से अवज्ञत रहे,ताकि उसके मन में नरक की याद स्वेद ताजा रहे,फलस्वरूप वह पुण्य के कार्यों के लिए तैयार रहे और पापों से,इधर उधर भटकने से और आलसा से दूर रहे।

- हे अल्लाह हमें!क़ब्र की यातना से और नरक की यातना से,जीवन और मौत के प्रलोभन से और मसीह़े दज्जाल के प्रलोभन से तेरा शरण चाहते हैं।
- हे अल्लाह!हम तुझसे स्वर्ग मांगते हैं और वे कथन एवं कार्य भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उन कथन एवं कार्य से भी जो नरक से निकट करदे।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- اللهم صل وسلم على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com

[9] देखेंःअबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस जिसे बोखारी(3521)और मुस्लिम(2856)ने रिवायत की है।

[10] देखेंःइब्ने उ़मर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस जिसे बोखारी(2365)और मुस्लिम(2242)ने वर्णन किया है।

موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 6

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े–क़िस्त 6

(क़यामत के कुछ दृश्य)

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إله إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ.

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون).

(يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).

(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार

की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़्दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون * فتعالى الله الملك الحق﴾.

अर्थात:क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये जाओगे?तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति।
ए मोमिनों!पिच्छले दो उपदोशों में आखिरत पर ईमान लाने के तक़ाज़े से संबंधित चर्चा की गई,जो कि यह हैं:सूर में फूंक मारना,क़्यामत की विशाल चिन्हें,मख़्लूक़ों(जीवों)को पुण:उठाया जाना,लोगों को मह़शर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सजा एवं हिसाब व किताब,स्वर्ग की नेमत(आशीर्वादों),नरक की गुनवक्ताएं,और आज हम इन्शा अल्लाह क़्यामत के कुछ दृश्यों के विषय में चर्चा करेंगे।
1.अल्लाह के बंदो!आखिरत के दिन पर ईमान लाने में क़्यामत के दृश्यों पर ईमान लाना भी शामिल है,उन दृश्यों में से यह भी है कि:नामाए आ़माल (कर्मपत्र)(गगन)में उड़ रहे होंगे,अत:लोग उन्हें(अपने हाथों से)प्राप्त करेंगे,कुछ लोग अपने दाएं हाथ से नामाए आ़माल (कर्मपत्र)लेंगे,ये सत्य मार्ग पर स्थिर रहने वाले होंगे,जबकि कुछ लोग बाएं हाथ से उसे पकड़ेंगे,ये काफिर होंगे,मोमिन खुशी खुशी अपने हाथ में नामाए आ़माल लेगा,अल्लाह का फरमान है:

﴿فأما من أوتي كتابه بيمينه فيقول هاؤم اقرءوا كتابيه * إني ظننت أني ملاق حسابيه * فهو في عيشة راضية * في جنة عالية * قطوفها دانية * كلوا واشربوا هنيئا بما أسلفتم في الأيام الخالية﴾

अर्थात:फिर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र दायें हाथ में वह कहेगा:यह लो मेरा कर्मपत्र पढ़ा।मुझे विश्वास था कि मैं मिलने वाला हूँ अपने हिसाब से।तो वह अपने मन

चाहे सुख में होगा।उच्च श्रेणी के स्वर्ग में।जिस के फलों के गुच्छे झुक रहे होंगे।(उन से कहा जायेगा):खाओ तथा पियो आनन्द ले कर उस के बदले जो तुम ने किया है विगत दिनों(संसार)में।

किंतु काफिर अपना नामाए अ़ामाल (कर्मपत्र) बाएं हाथ से अपनी पीठ के पीछे से प्राप्त करेगा,जिस प्रकार उसने अल्लाह की पुस्तक को पीठ पीछे डाल रखा,उसी प्रकार उसको अपना नामाए अ़ामाल भी पीठ पीछे से दिया जाएगा,ताकि उसे पूरा बदला मिल सके,अतःवह शोक व खेद एवं हसरत के साथ अपना नामाए अ़ामाल पकड़ेगा,अल्लाह का कथन है:

﴿وأما من أوتي كتابه بشماله فيقول يا ليتني لم أوتَ كتابيه * ولم أدر ما حسابيه * يا ليتها كانت القاضية * ما أغنى عني ماليه * هلك عني سلطانيه﴾

अर्थातःऔर जिसे दिया जायेगा उस का कर्मपत्र उस के बायें हाथ में तो वह कहेगाःहाय!मुझे मरो कर्मपत्र दिया ही न जाता!तथा मैं न जानता कि क्या है मेरा हिसाब?।काश मेरी मौत ही निर्णायक होती!नहीं काम आया मेरा धन।मुझ से समाप्त हो गया मेरा प्रभुत्व।

तथा अल्लाह ने अधिक फरमायाः

﴿وأما من أوتي كتابه وراء ظهره * فسوف يدعو ثبورا * ويصلى سعيرا * إنه كان في أهله مسرورا * إنه ظن أن لن يحور * بلى إن ربه كان به بصيرا﴾

अर्थातःऔर जिन को उन का कर्मपत्र बायें हाथ में दिया जायेगा तो वह विनाश(मृत्यु)को पुकारेगा। तथा नरक में जायेगा।वह अपनों में प्रसन्न रहता था।उस ने सोचा था कि कभी पलट कर नहीं आयेगा।क्यों नही?निश्चय उस का पालनहार उसे देख रहा था।

2.ए मोमिनो!क़यामत का एक दृश्य यह होगा कि नरक की पीठ पर पुल सरात का निर्माण किया जाएगा,फिर लोग उस पर से गुजरेंगे,मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत सर्वप्रथम उस पर से गुजरेगी,वह पैर फिसलने का स्थान होगा,अर्थात पैर उस पर फिसलेंगे,स्थिर नहीं रहेंगे,उस पर आंकड़े एवं कठोर प्रकार के विस्तृत एवं विशाल कांटे लगे होंगे,उन में एक ऐसा कांटा भी होगा जो मुड़ा हुआ होगा,वह सादान नाम के वृक्ष का कांटा होगा जो नज्द में हुआ करता है,पुलसरात से गुजरते हुए लोगों के तीन प्रकार होंगेःबिल्कुल सुरक्षित मुक्ति पाने वाला,घायल हो कर मुक्ति पाने वाला,और वह जो नरक की अग्नि में गिर जाएगा,अतःआंकड़ों एवं कांटों से कुछ लोग बच जाएंगे,उनको न घाव आयेगा और न वे कांटों के चपेट में आयेंगे,वे पूर ईमान वाले लोग होंगे जिन्हों ने अल्लाह की आज्ञा मानी और उसके अवज्ञा से बचते रहे।

ए मुसलमानो!दूसरे प्रकार में वे लोग होंगे जो आंड़कों से घायल हो जाएंगे,किंतु उनक चपेट में न आ सकेंगे और पुलसरात पार करने में सफल हो जाएंगे,उनके नामाए आ़माल में ऐसे पाप होंगे जिन से नरक में प्रवेश वाजिब(अनिवार्य)नहीं होता,बल्कि केवल घायल होना ही आखिरत में उनकी यातना होगी,उसके पश्चात उन्हें मुक्ति मिल जाएगी।

तीसरे प्रकार में वे लोग होंगे जिन्हें आंकड़े अपने चपेट में ले लेंगे और बलपूर्वक उन्हें नरक में फेंक देंगे,ये ऐसे मोमिन होंगे जो अपने पाप एवं बड़े पापों के कारण नरक में जाने के पात्र होंगे,यही स्थिति मोनाफिक़ों(कपटियों)की होगी,उन्हें भी आंकड़े उचक लेंगे और नरक की अग्नि में डाल देंगे,अल्लाह की शरण।किंतु मोमिनों को उनके पापों के समान नरक में यातना दी जाएगी फिर उन्हें निकाल दिया जाएगा,किंतु मोनाफिक़ों को स्वेद के लिए नरक के सबसे निचले चरण में रहना होगा,रही बात काफिरों की तो उन्हें पुलसरात के निर्माण से पूर्व ही नरक की ओर हांक कर ले जाया जाएगा,अल्लाह का कथन है: (وسيق الذين كفروا إلى جهنم زمرا)

अर्थातःतथा हॉके जायेंगे जो काफिर हो गये नरक की ओर झुण्ड बना कर।

तथा अल्लाह ने फिरआ़ौन के संबंध में फरमायाः

(يقدم قومه يوم القيامة فأوردهم النار وبئس الورد المورود)अर्थातःवह प्रलय के दिन अपनी जाति के आगे चलेगा,और उन को नरक में उतारेगा और वह क्या ही बुरा उतरने का स्थान है।

अतःउन में से प्रत्येक समूदाय मूर्ति,सूर्य और चॉद जैसे अपने परमेश्वर का अनुगमन करत हुऐ(नरक में प्रवेश करेगा),प्रत्येक समूह अपने परमेश्वर के साथ नरक में प्रवेश करेगा,नरक उनके सामने चमकती रैत के जैसे स्पष्ट होगी,उसके भाग आपस में एक दूसरे को चौड़ा चौड़ा कर रहे होंगे,अतःवे लगातार उसमें गिर जाएंगे।अल्लाह हमें इससे सूरक्षित रखे।[1]

अल्लाह के बंदो!पुलसरात पर लोगों की गति उनके बस में न होगी,और न उनकी शारीरिक शक्ति से उसका कोई संबंध होगा,बल्कि उनके अ़मलों(कार्यों)के अनुरूप उनके गुजरने की गति होगी,जैसा कि इस ह़दीस में आया है(जिस में है कि):उनके आ़माल उनको लेके दौड़ेंगे।[2]अतःजिस का अ़मल पुण्य एवं उत्तम होगा वह तेज गति से गुजर जाएगा,कोई पलक झपकने के जैसे गुजर जाएगा,कोई बिजली के जैसे गुजर

---

[1]देखें:सह़ी बोखारी(7437)और मुस्लिम(182),अबूहोरैरा का वर्णन,इसी प्रकार देखें:सह़ी बोखारी(4581)और मुस्लिम(183)अबू सईद का वर्णन।

[2] देखें:सह़ी मुस्लिम(195)ह़ोज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु की रिवायत

जाएगा,कोई हवा के गुजरने के जैसा(तेजी से)गजर जाएगा,कोई पक्षि गुजरने के जैसा,कोई तेज गति वाले घोड़े और सवारी के जैसे और कोई मनुष्य के दौड़ने के जैसा गुजर जाएगा,यहां तक कि अंतिम व्यक्ति घिसट घिसट कर गुजरेगा,जिसका अ़मल बुरा होगा वह धीमी गति से गुजरेगा,और यदि वह नरक का पात्र होगा तो आंकड़े उसे दबोच लेंगे।[3]

3.ए मोमिनो!क़्यामत का एक दृश्य यह भी होगा कि कुछ मोमिनों को स्वर्ग एवं नरक के बीच एक पुल पर रोका जाएगा,उस दिन उन मोंमिनों को जिन्हें नरक की यातना दी जाएगी,नरक से निकलने के पश्चात उन्हें स्वर्ग एवं नरक के बीच एक पुल पर रोका जाएगा,ताकि उनके दिलों में जो ईर्ष्या जलन,घृणा कीना होगी,उससे उनको पवित्र किया जाए,क्योंकि पूर्णता से दिलों के पवित्र एवं साफ होने के पश्चात ही वे स्वर्ग में प्रवेश कर सकेंगे,इमाम बोखारी ने अल्लाह के फरमान

﴿ونزعنا ما في صدورهم من غل ﴾

की व्याख्या में अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लहु अंहु से वर्णन किया है कि रसूल सल्ललाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"ईमान वाले नरक से छुटकारा पाएंगे तो नरक एवं स्वर्ग के बीच उन्हें एक पुल पर रोक दिया जाएगा,फिर दुनिया में जो एक दूसरे पर अन्याय किया होगा उसका क़िसास(बदला)लिया जाएगा,यहां तक कि जब वे पवित्र हो जाएंगे तो उन्हें स्वर्ग में प्रवेश होनी की अनुमति होगी।उस हस्ती की शपथ जिसके हाथ में मोहम्मद की जान है!स्वर्गवासियों में से प्रत्येक अपना स्थान दुनिया में अपने घर के अपेक्षा में अधिक जानने वाला होगा"।[4]

इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाहु फरमाते हैंःख़बीस एवं अपवित्र आतमाओं के लिए पवित्र स्वर्ग में प्रवेश करना उचित नहीं,जहां किसी भी प्रकार की ख़बासत अपवित्रता नहीं होगी,इस लिए खबीस व अपवित्र आतमाओं के लिए यह उचित नहीं होगा कि वे पवित्र स्वर्ग में प्रवेश करें।[5]

अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा

---

[3] इसका प्रमाण देखेंःसही बोखारी(7437)और मुस्लिम(182)।

[4] इसे बोखारी(6535)ने वर्णित किया है।

[5] देखेंः"फतावा इब्ने तैमिया"(14/344)संक्षेप से साथ।

की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

4.अल्लाह आप पर कृपा करे!आप यह जान लें कि क़्यामत के दिन एक दृश्य यह भी होगा कि पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़्यामत के दिन शिफाअ़त(अनुशंसा)करेंगे,शिफाअ़तं उ़ज़्मा(महान अनुशंसा)जिसका उल्लेख पूर्व में बीत चूका है,उसके अतिरिक्त चार प्रकार की शिफाअ़तें होंगी।आपकी प्रथम शिफाअ़त मोंमिनों के हित में स्वर्ग में प्रवेश के लिए होगी,क्योंकि मोमिनीन जब स्वर्ग के पास आएंगे तो उसके द्वार बंद होंगे,उस समय पैगंबर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वर्ग के द्वार पर दस्तक देंगे,स्वर्ग का खाजिन[6](रक्षक)पूछेगाःआप कोन?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाएंगेःमोह़म्मद।वह कहेगाःमुझे आदेश दिया गया है कि आप से पूर्व किसी के लिए द्वार न खोलूं।[7]

अनस बिन मालिक रज़ीटल्लाहु से वर्णित है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःलोगों में प्रथम व्यक्ति हूंगा जो स्वर्ग के बारे में अनुशंसा करेगा और समस्त पैगंबरों से मेरे अनुयायी अधिक होंगे।[8]

ज्ञात हुआ कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम स्वर्ग में प्रवेश करने वाले र्स्वप्रथम व्यक्ति होंगे,आप से पूर्व कोई प्रवेश नहीं कारेगा,इससे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी उम्मत का स्थान स्पष्ट होता है,वह इस प्रकार से कि र्स्वप्रथम आप और आपकी उम्मत स्वर्ग में प्रवेश होगी।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दूसरी सिफारिश(अनुशंसा)उन लोगों के हित में होगी स्वर्ग में प्रवेश के विषय में होगी जिन से कोई हिसाब व किताब न होगा,इसका प्रमाण अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु की शिफाअ़त वाली लम्बी ह़दीस है,उसमें है किःए

---

[6] खाजिन का अर्थ होता है रक्षक,यह प्रसिद्ध है कि स्वर्ग के रक्षक का नामःरिज़वान है,जब कि इसका कोई सत्य प्रमाण नहीं है,सत्य यह है कि उसे स्वर्ग के खाजिन एवं रक्षक ही के नाम से जाना जाए जैसा कि ह़दीस में आया है,यह लाभ मुझे शैख मोह़म्मद बिन अ़ली आदम अलअसयूबी रह़िमहुल्लाहु से प्राप्त हुआ है।

[7] इसे मुस्लिम(197)ने अनस बिन मालिक रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।

[8] इसे मुस्लिम(196),अह़मद(3/140)और दारमी ने अपने प्राक्कथन,खण्ड أعطي النبي من الفضل।वर्णित किया है।

मोह़म्मद!आप अपनी उम्मत के उन लोगों को जिन का कोई हिसाब व किताब नहीं,स्वर्ग के दाएं द्वार से स्वर्ग में प्रवेश करें[9]।[10]

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तीसरी सिफारिश उन पापी मोमिनों के हित में नरक से निकलने के लिए होग जो अपने पापों के कारण रनक में प्रवेश होंगे,आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इस ह़दीस में यही सिफारिश हैः"प्रत्येक नबी के लिए एक दुआ़ स्वीकृत थी जो उसने दुनिया में करली किंतु में चाहता हूं कि अपनी दुआ़ को आखिरत में अपनी उम्मत की सिफारिश के लिए सुरक्षित रखूं"।[11]तथा आप की यह ह़दीस किः"मेरी सिफारिश मेरी उम्मत के लिए उन लोगों के लिए होगी जिन्हों ने बड़े बड़े पापों को किया होगा।[12]

चौथो सिफारिशःनबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने चचा अबू तालिब के हित में यातना को हलका करने के लिए करेंगे,क्योंकि वह आपकी रक्षा करता और मुश्रिकों के संकट से आप की रक्षा करता था,अ़ब्बास बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित है,उन्हों ने पैगंबर सल्लल्लाह़ अलैहि वसल्लम से पूछा कि आपने अपने चचा अबू तालिब को क्या लाभ पहुंचाया जो आपकी सहायता करता था और आप के लिए दूसरों से नाराज रहता था?आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"वह टखनों तक हलकी अग्नि में है,यदि में न होता तो वह अग्नि की तह में बिल्कुल नीचे होता"।[13]

अल्लाह के बंदो!क़यामत के चार दृश्य हैंःनामाए अ़माल(कार्य सूची)का(हवा में)उड़ना,नरक की पीठ पर पुल सरात का होना,स्वर्ग व नरक के बीच एक पुल सरात पर कुछ मोमिनों का ठहरना,और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वे पांच सिफारिश जो आप क़यामत के दिन करेंगे।

हे अल्लोह!हमें आखिरत में अपने नबी मोह़म्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सिफारिश से सम्मानित फरमा।

---

[9] मेंने कहाःइससे उनकी महत्ता स्पष्ट होती है,क्योंकि स्वर्ग के सात द्वार हैं जैसा कि कुरान में आया हैः, ﴿لها سبعة أبواب﴾इन समस्त द्वारों के बजाये उनका दाई द्वार से प्रवेश होना उनकी श्रेष्ठता का प्रमाण है,क्योंकि दाईं(ओर)की श्रेष्ठता इस्लाम में ज्ञात एवं प्रसिद्ध है।

[10]इसे बोखारी(4712)ने वर्णित किया है।

[11] इसे बोखारी(6304)और मुस्लिम(198)ने अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु से वर्णित किया है।

[12] इसे तिरमिज़ी(2435),अबू दाउूद(4739),अह़मद(2/213)ने वर्णित किया है और अल्बानी ने अलकिश्कात(5599. 5598)में इसे सह़ी कहा है,अनस बिन मालिक की रिवायत।

[13] इसे बोखारी(3883)और मुस्लिम(209)और अह़मद(1/206)ने रिवायत किया है।

हे अल्लाह!हम तुझ से स्वर्ग को मांगते हैं और वे कार्य एवं कथन भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तुझ से तेरी शरण चाहते हैं नरक से और ऐसे कार्य एवं कथन से भी जो नरक से निकट करे।

हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम और हर उस कार्य का प्रेम प्रदान कर जो तुझ से निकट करदे।

हे अल्लाह!हमने अपना बड़ा हानि किया और यदि तू हमे क्षमा नहीं प्रदान करेगा और हम पर कृपा नहीं करेगा तो निसंदेह हम हानि पाने वालों में से हो जाएंगे।

हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों को क्षमा करदे,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक के हों अथवा **बाह्य**।

हे हमारे रब!हमें दुनिया में नेकी दे और आखिरत में भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।

اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

२१ मोह़र्रम **१४४३** हिजरी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com

موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 7

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े–क़िस्त 7

(क़यामत के दिन की जाने वाली शिफाअ़त के प्रकार)

प्रथम उपदेश:

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـــه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُـــولُهُ. (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْـــلِمُون). (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रसंशा के पशचात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई

बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन हैः

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون * فتعالى الله الملك الحق﴾.

अर्थातः क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये जाओगे?तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति।

ए मोमिनो!पिच्छले दो उपदेशों में आखिरत के दिन पर ईमान लोन के तक़ाज़े के संबंध में चर्चा की गई,जो कि ये हैंःसूर में फूंक मारना,क़यामत की विशाल चिन्हें,मख्लकों का पुनःउठाया जाना,लोगों को महशर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सज़ा एवं हिसाब व किताब एवं स्वर्ग की नेमत,नरक की गुणवत्ताए,क़यामत के कुछ दृश्यें,आज हम ईन्शा अल्लाह क़यामत के दिन की जाने वाली शिफाअ़त के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा करेंगे।

- अल्लाह के बंदो!क़यामत के दिन जो दृश्य घटित होंगे उन में यह भी होगा कि सिफरिश करने वाले सिफारिश के पात्रों के लिए सिफारिश करेंगे,सिफारिश करने वालों के छ प्रकार हैंःरसूल,मोमिन,शहीद,किशोर बालक,देवदूत एवं कुरान।

1.रसूलों का अपने मोमिन अनुयायियों के लिए सिफारिश करनाःइसका संबंध उन अनुयायियों से होगा जो अपने पापों के कारण नरक में प्रवेश होंगे,अतःरसूल सिफारिश करेंगे कि उन्हें नरक से निकाला जाए,इसका प्रमाण जाबिर रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है,फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फरमायाः"जब स्वर्गवासी एवं नरकवासी के बीच अंतर हो जाएगा,और स्वर्गवासी स्वर्ग में और नरकवासी नरक में प्रवेश कर जाएंगे तो रसूल सिफारिश के लिए खड़े होंगे,(अल्लाह तआ़ाला)फरमाएगाःजाओ और जिन्हें तुम पहचानते हो उन्हें(नरक से)निकाल लो,अतः वह अपने(अनुयायियों को)निकालेंगे जबकि वे जल भुन कर काले हो चुके होंगे,फिर उन्हें एक नहर में डाल देंगे जिसे(नहरे हयात)कहा जाता है,उनके झ़लसे हुए शरीर के अंग नहर के किनार गिर जाएंगे,और वे क्कड़ियों के जैसे(तेजी के साथ)पुनःसफेद हो कर उग जाएंगे,फिर वह रसूल (दूसरी बार) सिफारिश करेंगे तो(अल्लाह)फरमाएगाःजाओ,जिस के दिल **हृदय** में क़ीरातव[1]के समान भी ईमान हो उसे निकाल लाओ,अतःवह कुछ लोगो को निकाल लाएंगे,फिर सिफारिश करेंगे,(अल्लाह तआ़ाला)फरमाएगाःजाओ,जिस के **हृदय** में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे निकाल लाओ.....अलह़दीस।[2]

रसूल उन मोमिनों के लिए सिफारिश करेंगे जो नरक में जा चुके होंगे,इस का प्रमाण ह़ोज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःइब्राहिम(अलैहिस्सलाम)क़्यामत के दिन कहेंगेःए मेरे परवरदिगार!तो अल्लाह तआ़ाला फरमाएगाःलब्बेक ए इब्राहिम!इब्राहिम(अलैहिस्सलाम)कहेंगेः(मेरी संतान को त् ने नरक में डाल दिया),अल्लाह तआ़ाला फरमाएगाःजिस के **हृदय** में एक अंश अथवा एक दाना के समान भी ईमान हो,उसे नरक से निकाल लो।[3]

2.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली शिफाअ़त(अनुशंसा)का दूसरा प्रकार यह होगा कि जो मोमिनीन स्वर्ग में होंगे वे अपने उन भाइयों के लिए नरक से निकलने की सिफारिश करें गे जो नरक में होंगे,इस का प्रमाण सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

---

[1] जन का एक माप है,जो आज कल गेहूं के दो दाने के समान होता है।देखेंः"अलमोजम अलवसीत"।

[2] इसे बोखारी(6558)और अह़मद(3/325)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द अह़मद के हैं।

[3] इसे इब्ने ह़िब्बान(7378)ने रिवायत किया है,और शोऐब अलअरनाउ़ूत ने अपने शोध में कहा किःइसकी सनद सह़ीहैन(बोखारी एवं मुस्लिम)की शर्त पर सही़ है।

वसल्लम ने फरमायाः.....यहां तक कि जब नरक से मक्ति पालेंगे,शपथ अल्लाह की जिस के हाथ में मेरा प्राण है!तुम में से कोई पूरा पूरा अधिकार प्राप्त करने(के विषय)में इस प्रकार अल्लाह से विनती एवं प्रार्थना नही करता जिस प्रकार से क़्यामत के दिन मोमिन अपने मुसलमान भाइयों के प्रति करेंगे जो अग्नि में होंगे,वे कहेंगे किःए हमारे रब!हमारे ये भाई भी हमारे साथ नमाज़ पढ़ते थे और हमारे साथ रोज़े रखते थे और हमारे साथ अन्य(नेक)कार्यों को करते थे(उनको भी नरक से मुक्ति प्रदान फरमा)अतःअल्लाह फरमाएगा किः(जाओ और जिसे तुम पहचान पाओ उसे नरक से निकाल लो)और अल्लाह उनके मुखों को नरक पर ह़राम(वर्जित)कर देगा। अतःवे बहुत से ऐसे लोगों को निकालेगे जिनकी आधी पिंडलियों तक अथवा घुटनों तक आग पकड़ चुकी होगी।फिर वापस आएंगे और कहेंगेः (ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हम ने नरक में नहीं छोड़ा) ।अल्लाह तआ़ला उनसे फरमाएगा कि जाओ और जिस के **ह्रदय** में अशरफी के समान भी ईमान हो उसे भी निकाल लाओ ।अतःवे अनेक लोगों को निकालेंगे ।फिर वे वापस आएंगे और कहेंगेः(ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हमने रनक में नहीं छोड़ा) ।अल्लाह तआ़ला फिर फरमाएगा कि जाओ और जिस के **ह्रदय** में आधी अशरफी के समान ईमान हो उसे भी निकाल लाओ ।अतःवे अनेक लोगों को निकालेगे,फिर लौट कर आएंगे और कहेंगेः:(ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हम ने नरक में नहीं छोड़ा) ।फिर अल्लाह फरमाएगाःजाओ और जिसके **ह्रदय** राई के दाने के समान भी ईमान हो,उसे निकाल लो ।अतःवे अनेक लोगों को निकालेंगे,फिर कहेंगेः(ए हमारे रब!हम ने नरक में किसी पुण्य करने वाले को नहीं छोड़ा) ।अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अंहु कहा करते थे

कि:यदि तुम पुष्टि नहीं करते तो यह आयत पढ़ो «إن الله لا يظلم مثقال ذرة وإن تك حسنة يضاعفها»"अल्लाह तआ़ला।[4]

3.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली सिफारिश का तीसरा प्रकार यह होगा कि देवदूत पापी मोमिनों के हित में नरक से निकलने की सिफारिश करेंगे,फिर अल्लाह तआ़ला बिना किसी सिफारिश के केवल अपने कृपा एवं दया से अनेक समूहों को नरक से निकालेंगा,उपरोक्त सिफारिशों के पश्चात अल्लाह तआ़ला फरमाएगा:"देवदूतों ने सिफारिश की,पैगंबरों ने सिफारिश की,मोंमिनों ने सिफारिश की,अब ارحم الراحمين (सर्वाधिक दया करने वाले) के अतिरिक्त कोई शेष नहीं रहा(एक शब्द में है कि:केवल मेरी सिफारिश रह गई),तो वह आग से एक **मुट्ठी** भरेगा और ऐसे लोगों को उस में से निकाल ले गा जिन्हों ने कभी भलाई का कोई कार्य नहीं किया था,और वे(जल कर)कोयला हो चुके होंगे,फिर वह उन्हें स्वर्ग के दहानों पर(बहने वाली)एक नहर में डाल देगा,जिस को नहरे हयात कहा जाता है,वे इस प्रकार से (उग कर) निकलेंगे जिस प्रकार से(घास का)छोटा बीज सैलाब के कूड़े कर्कट में फूटतो है"।[5]

जाबिर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस में आया है कि:अल्लाह तआ़ला फरमाएगा:.....अब में अपने ज्ञान एवं कृपा के आधार पर(नरक से मख़्लूक़ को)निकालूंगा,फरमाया कि:अत:उन मोमिनों ने जितने लोगों को निकाला था उनके कई गुना संख्या को अल्लाह तआ़ला निकाले गा और फिर उस संख्या के कई गुना लोगों को निकाले गा,और उनकी गदन पर लिखा देगा:(अल्लाह

[4] इसे बोखारी(7439)और मुस्लिम(183)ने वर्णित किया है।

[5] इसे बोखारी(7439)और मुस्लिम(183)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के है,ह़दीस के वर्णन कर्ता:अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अन्हु,जो शब्द कोष्ठक में लिखे गए हैं वे बोखारी के हैं।

तआ़ला के स्वतंत्र बंदे),फिर वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे और वहां उनका नाम"جہنمیون" होगा।[6]

4.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली शिफाअ़त का चौथा प्रकार यह होगा कि शहीद अपने मोमिन भाइयों के लिए सिफारिश करेंगे,इसका प्रमाण मिक़्दाम बिन मादीकरब रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"अल्लाह के पास शहीदों के लिए छ पुरस्कार हैं,(1)रक्त का प्रथम बोन्द गिरने के साथ ही उसकी क्षमा मिल जाता है,(2)वह स्वर्ग में अपना स्थान देख लेता है,(3)क़ब्र की यातना से सुरक्षित रहता है,(4) «فزع الأكبر» (बड़े घबराहट वाले दिन)से सुरक्षित रहेगा,(5)उसके सर पर सम्मान का मुकुट रखा जएगा जिस का एक याक़ूत दुनिया एवं उसकी सारी चीजों से अच्छा है,(6)बहत्तर(72)स्वर्ग की हूरों से उसका विवाह किया जाएगा,और उसके सत्तर परिजनों के हित में उसकी शिफाअ़त स्वीकार की जाएगी"।[7]

5.अल्लाह के बंदा!क़्यामत के दिन होने वाली सिफारिश में पांचवे प्रकार की सिफारिश वह होगी जो यौवनारंभ से पूर्व मृत्यु पाने वाले बालक अपने माता. पिता के हित में करेंगे,(इसके लिए ह़दीस में)فَرَطका शब्द आया है जिस का अर्थ होता हैःवह बालक जो यौवनारंभ से पूर्व मृत्यु पालें,इसका प्रमाण अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःजिस मुसलमान माता पिता की भी तीन अप्रौढ़ बच्चे की मृत्यु हो जाएं तो अल्लाह तआ़ला उनको अपने कृपा से क्षमा प्रदान करदेता। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैंः"उनसे कहा जाएगाःस्वर्ग में प्रवेश करजाओ,तो वे कहेंगे(हम प्रवेश नहीं कर सकते)जब तक कि हमारे माता

---

[6] इसे अह़मद(3/325)ने वर्णित किया है औरने वर्णित किया है और"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं ने इसे सह़ी मान कर कहाःइसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर सह़ी है।

[7] इसे तिरमिज़ी(1663),इब्ने माजा(2799),अह़मद(4/131)ने रिवायत किया है और अल्बानी ने"अलजनाएज़"(पृष्ठ 50,वर्षः1412हिजरी)में इसे सह़ी कहा है।

पिता प्रवेश न करें,(फिर)कहा जाएगाः(जाओ)अपने माता पिता के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर जा"।

6.अल्लाह के बंदो!क़यामत के दिन होने वाली सिफारिश का **छठा** प्रकार यह है कि कुरान मोमिनों के हित में सिफारिश करेगा,इसका प्रमाण अबू ओमामा बाहेली रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि मैं ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः"कुरान पढ़ा करो क्योंकि वह क़यामत के दिन कुरान वालों(ह़िफज़ व क़िराअत(सस्वरपाठ)एवं अ़मल करेन वालों)का सिफारशी (सिफारिशकर्ता) बन कर आएगा।दो रोशन चमकती हुई सूरतेंःअलबक़रा एवं आलेइमरान पढ़ा करो क्योंकि वे क़यामत के दिन इस प्रकार से आएंगी जैसे वे बादल अथवा छाया हों अथवा जैसे वह एक सीध में उड़ते पछियों के दो डाड़े हों,वे अपनी संगत में रहने वालो(अर्थात उसे पढ़ने और उस पर अ़मल करने वालों)की ओर से रक्षा करेंगी"।[8]

- अल्लाह के बंदो!यह क़यामत के दिन होने वाली छ प्रकार की सिफारिशें हैं,जिन से नरक में जाने वाले मोमिनों को लाभ मिले गा और(उन सिफारिशों के माध्यम से)उन मोमिनों को स्वर्ग में जाने की अनुमति मीलेगी जो नरक में प्रवेश नहीं किए होंगे।
- अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको कुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको कुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्वितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

---

[8]इसे मुस्लिम(804)और अह़मद(2/510)ने वर्णन किया है और अल्बानी ने"सहीहुल जामे"(5780)में सह़ी कहा है।

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा अपनाएं और जान लें कि उपरोक्त सिफारिश हर किसी को प्राप्त नहीं होंगी,बल्कि जिस के अंदर सिफारिश की शर्तें पाई जाएं गी उसी के हित में अल्लाह सिफारिश को स्वीकार करेगा,अन्यथा सिफारिश **रद्द** कर दी जाएगी,इस सिफारिश को (الشفاعة المثبتة)कहा जाता है,अर्थात जिसका होना सिद्ध है,शिफाअ़त की दो शर्तें हैं:अल्लाह तआ़ला का सिफारशी(सिफारिशकर्ता)को सिफारिश की अनुमति देना,इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह फरमान है:

من ذا الذي يشفع عنده إلا **بإذنه**

अर्थातःकोन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके सामने सिफारिश करे।

तथा यह किः

﴿ولا تنفع الشفاعة عنده إلا لمن **أذن له**﴾

अर्थातःसिफारिश भी उसके पास लाभ नहीं देती सिवाए उनके जिनसे अल्लाह प्रसन्न हो।[9]

दूसरी शर्तःजिसके हित में सिफारिश की जाए,अल्लाह का उससे प्रसन्न होना,इस शर्त का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है: ﴿ولا يشفعون إلا لمن **ارتضى**﴾

अर्थातःवह किसी की भी सिफारिश नहीं करते सिवाए उनके जिनसे अल्लाह प्रसन्न हो।

तथा यह किः

﴿يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمٰن **ورضي** له قولا﴾

अर्थातःउस दिन सिफारिश कुछ काम नहीं आएगी मगर जिसे रह़मान आदेश दे और उसकी बात को पसंद फरमाए।

---

[9] क़ुरान के एकीस(21)स्थानों पे अल्लाह तआ़ला की अनुमति के बिना सिफारिश करने का खण्डन किया गया है।देखें:"المعجم المفهرس لألفاظ القرآن الكريم" مادة: شفع

अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों शर्तों को अपने इस फरमान में एक साथ बयान किया है:

﴿وكم من ملك في السماوات لا تغني شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن **يأذن** الله لمن يشاء **ويرضى**﴾

अर्थातःऔर बहुत से देवदूत आकाशों में हैं जिन की सिफारिश कुछ भी लाभ नहीं दे सकती मगर यह और बात है कि अल्लाह तआ़ला अपनी प्रसन्नता और अपनी चाहत से जिस के लिए चाहे अनुमति देदे।

सिफारिश उसी के हित में(स्वीकार)की जाएगी जिस से अल्लाह प्रसन्न हो,इसका प्रमाण यह भी है कि इब्राहिम अलैहिस्सलाम अपने पिता आज़र के लिए सिफारिश करेंगे किंतु अल्लाह तआ़ला उनकी सिफारिश को स्वीकार नहीं करेगा,क्योंकि उनके पिता मुशरिक हैं,जबकि सिफारशी(सिफारिशकर्ता) इब्राहिम अलैहिस्सलाम होंग जो कि खलीलुल्लाह हैं।

- ए मोमिनो!यह जानना जरूरी है कि अल्लाह तआ़ला बंदा से उसी समय प्रसन्न होगा जब वह तौह़ीद(एकेश्वरवाद)का पालन करेगा,जिस का अर्थ हैःसमस्त प्रार्थानाओं को केवल अल्लाह पाक के लिए ही करना,चाहे वह नमाज़ हो,दुआ़ हो,बली हो और नजर इत्यादि हो।जैसा कि अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित ह़दीस में आया है किः.....मैं ने अपनी दुआ़ क़यामत के दिन अपनी उम्मत के सिफारिश के लिए सुरक्षित कर ली है,अतःयह दुआ़ इन्शा अल्लाह!मेरी उम्मत के प्रत्येक मानव को पहुंचेगी जो अल्लाह के साथ किसी को साझो न करते हुए मृत्यु पाया"।इसे तिरमिज़ी।[10]

यह और इस जैसी अन्य ह़दीसें इस बात पर साक्ष्य हैं कि दुआ़ इत्यादि जैसी समस्त प्रार्थानाओं को केवल अल्लाह मात्र के लिये ही करना उस व्यक्ति के लिए प्रथम शर्त है जो क़यामत के दिन सिफारिश करने वालों की सिफारिश से लाभान्वित होना चाहता है,किंतु वह व्यक्ति जो शिर्क में लतपत रहा,जैसे मख्लूक से दुआ़ करे,अथवा उनके नाम पर बलि चढ़ाए और नजर माने.... इत्यादि तो ऐसे व्यक्ति को किसी की सिफारिश प्राप्त नहीं होगी,चाहे जो भी

[10] इसे तिरमिज़ी(3602)ने रिवायत किया है और कहा है किःयह ह़दीस ह़सन सह़ी है।

करले,और यदि कोई व्यक्ति उसके हित में सिफारिश करेगा भी तो उसकी सिफारिश स्वीकार नहीं होगी,चाहे सिफारशी(सिफारिशकर्ता)आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही क्यों न हो,क्योंकि शिर्क,सिफारिश(की स्वीकृती)में बाधा है।

- हे अल्लाह!हमें आखिरत में सिफारिश करने वालों की सिफारिश से लाभान्वित फरमा।
- हे अल्लहा!हम तुझ से स्वर्ग चाहते हैं और वे कार्य एवं अ़मल भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से भी जो नरक से निकट रकदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम एवं उस अ़मल से प्रेम प्रदान कर जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमने अपना बड़ा हानि किय और यदि तू क्षमा न करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानी उठाने वालों में से हो जाएंगे।तू हमें अपने पास से क्षमा प्रदान कर और हम पर कृपा कर,निसंदेह तू अति क्षमा करने वाला बड़ा कृपालु है।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों को क्षमा करदे,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य** ।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखकः

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

२९ मोह़र्रम **१४४३** हिजरी

अनुवादकः

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com

موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 8

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : طارق بدر السنابلي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े- किस्त 8

(क़ब्र के परिक्षण, उसके प्रकोप एवं उपहार पर विश्वास रखना)

إِنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَـــه إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُــولُهُ. (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْــلِمُون). (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَـــاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَــاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَــدِيداً * يُصْــلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रशंसाओं के पश्चात:

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है एवं सर्वश्रेष्ठ मार्ग मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है एवं सबसे दुष्ट चीज़ धर्म में अविष्कार किए

गए नवोन्मेष हैं प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ नवाचार है, हर नवाचार गुमराही है एवं हर गुमराही नरक की ओर ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो! अल्लाह से भयभीत रहो एवं उसका डर अपनी बुद्धि एवं हृदय में जीवित रखो, उसके आज्ञाकार बने रहो एवं अवज्ञा से वंचित रहो, ज्ञात रखो कि अल्लाह तआ़ला अपने विधान में, अपने भाग्य (वितरण करने) में और अपने बदले एवं यातना में सर्वश्रेष्ठ बुद्धिमान है एवं अल्लाह तआ़ला की एक बुद्धिमत्ता यह भी है कि उसने अपने सृष्टि हेतु एक समय स्थित किया है जिसमें उन्हें उन कर्मों का बदला देगा जिन को अपने भविष्यवक्ताओं के माध्यम से उन पर अनिवार्य किया, अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون * فتعالى الله الملك الحق﴾.

अर्थात: क्या तुम्हें यह भ्रम है कि हमने तुम्हें निरर्थक पैदा

किया है एवं यह की तुम हमारी ओर नहीं लौटाए जाओगे?

ए मोमिनो! पश्चात के ७ उपदेशों में प्रलय के दिन में विश्वास रखने हेतु आवश्यकताओं पर चर्चा की गई, जो तुरही फूंकने, सर्वश्रेष्ठ क़यामत के लक्षण, सृष्टि के उठाए जाने, न्याय के मैदान में मनुष्यों के एकत्रित होने, लाभ-व-यातना, जांच पड़ताल, स्वर्ग के उपहार, नरक की विशेषताएं, प्रलय के दिन की कुछ दृष्टियां, एवं प्रलय में प्रदर्शित होने वाले अनुशंसा के प्रकार (जैसी बातों) आधारित पर थीं, एवं आज के उपदेश में हम इन्-शा-अल्लाह

जिस शीर्षक के अंतर्गत चर्चा करेंगे उसका भी संबंध प्रलय के दिवस पर ईमान लाने से है, और वह है: क़ब्र के परिक्षण, उसके प्रकोप एवं उपहार पर विश्वास रखना।

ए मुसलमानो! फ़ित्ने का अर्थ: प्रश्न एवं परीक्षण है, यहां क़ब्र के फ़ित्ने का अर्थ वो ३ प्रश्न हैं जो मृत्यु व्यक्ति से पूछे जाते हैं: तुम्हारा पालनहार कौन है? एवं तुम्हारा धर्म क्या है? तुम्हारे दूत कौन हैं? यदि मृत्यु व्यक्ति धर्मनिष्ठ होगा तो प्रश्न व उत्तर के समय अल्लाह तआ़ला उसे स्थिरता प्रदान करेगा, एवं सहीह उत्तर देने की शक्ति देगा, एवं यदि वह दुष्कृत्य होगा तो उसे सहीह उत्तर देने की शक्ति नहीं मिलेगी, एवं वह प्रकोप को झेलेगा, अल्लाह का शरण।

क़ब्र में मृत्यु से प्रश्न किए जाने के स्थित होने के संबंध में तीन हदीसें हैं: ●प्रथम: बुख़ारी ने क़तादा से एवं उन्होंने अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हू से रिवायत किया है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: व्यक्ति को जब क़ब्र में रखा जाता है, एवं जनाज़े में उपस्थित होने वाले व्यक्तिगण उस से प्रस्थान कर जाते हैंः तो वह अभी उनके जूतों की ध्वनि सुन रहा होता है कि दो देवदूत (मुनकर नकीर) उसके निकट आ जाते हैं, वह उसे बिठा कर पूछते हैं: उस व्यक्ति अर्थात: मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के संबंध में तुम्हारी क्या आस्था थी, विश्वासी तो कहेगा कि मैं गवाही देता हूं कि मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के दास एवं दूत हैं, इस उत्तर पर उस से कहा

जाएगा कि तू यह देख अपना नरक का ठिकाना, परंतु अल्लाह तआ़ला ने इसके बदले में तुम्हारे हेतु स्वर्ग में ठिकाना दिया है, उस समय उसे स्वर्ग एवं नरक दोनों ठिकाने प्रदर्शित कराए जाएंगे और पाखंडी एवं काफ़िर से जब पूछा जाएगा कि उस व्यक्ति के संबंध में तू क्या कहता था? तो वह कहेगा: मुझे कुछ भी ज्ञात नहीं, मैं भी वही कहता था जो अन्य व्यक्तिगण कहते थे, फिर उससे कहा जाएगा: ना तूने उसे अवगत होने का प्रयास किया, एवं ना ही बुद्धिमान व्यक्तिगण के मार्ग को अपनाया, फिर उसे लोहे के सोंटे से बहुत ही शक्ति के साथ मारा जाएगा कि वह चिल्ला उठेगा, उसकी इस तीव्र ध्वनि मनुष्यों एवं जीन्नों के अतिरिक्त आस-पास (हाफ़िज़ इब्ने ह़जर ने फ़तहुल्-बारी में जो बात लिखी है उस से ज्ञात होता है कि इसका अर्थ पशु हैं, क्योंकि मुसनद बज़्ज़ार में अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस आई है: उस की तीव्र ध्वनि को मनुष्यों एवं जीन्नों के अतिरिक्त संपूर्ण पशु सुनेंगे।) की संपूर्ण सृष्टि सुनेगी।

(बुख़ारी: १३७४)

●मृत्यु से क़ब्र में प्रश्न किए जाने का द्वितीय साक्ष्य: बराअ बिन आ़ज़िब रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस है: विश्वासी मृत्यु के निकट दो देवदूत प्रकट होते हैं, उसे बिठाते हैं एवं प्रश्न करते हैं: तुम्हारा पालनहार (पूज्य) कौन है? तो वह कहता है: मेरा पालनहार (पूज्य) अल्लाह है, फिर वो दोनों उनसे पूछते हैं? तुम्हारा धर्म क्या है? वह कहता है: मेरा धर्म इस्लाम है, फिर पूछते हैं: यह कौन हैं जो तुम्हारे बीच अवतरित किए गए? वह कहता है:

वह अल्लाह के दूत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं, फिर वो कहते हैं: तुम्हें यह कहां से ज्ञात हुआ? वह कहता है: मैंने अल्लाह की पुस्तक का सस्वर पाठ किया, उस पर विश्वास किया एवं उसको सत्य समझा। फिर पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: मेरे दास ने सत्य कहा इस कारणवश उसके हेतु स्वर्ग का बिछावना बिछा दो, उसे स्वर्ग का वस्त्र पहना दो एवं उसके हेतु स्वर्ग की ओर का एक द्वार खोल दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "फिर स्वर्ग का वायु एवं उसकी सुगंध आने लगती है, एवं दृष्टि की अंतिम सीमा तक उसके क़ब्र को विशाल कर दिया जाता है"। फ़रमाया: उसके निकट एक अति सुंदर मनुष्य आता है, वह सुंदर वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से सुगंध फूट रही होती है, वह कहता है: "तुम्हारे हेतु ऐसे उपहारों का शुभ समाचार है जिस से तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होगी, यही वह दिवस है जिसका तुम्हें वचन दिया जाता था, वह से कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा लाभों का उपहार लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा पुण्य-कर्म हूं। वह व्यक्ति कहता है: हे पालनहार! क़यामत प्रकट कर दे ताकि मैं अपने परिवार एवं अपने धन संपत्ति की ओर लौट जाऊं।

एवं रहा काफ़िर तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसकी मृत्यु का उल्लेख करते हुए फ़रमाया: उसके निकट दो देवदूत आते हैं, उसे उठाते हैं एवं पूछते हैं: तुम्हारा पालनहार कौन है? वह कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, फिर वह दोनों उससे प्रश्न करते हैं: यह व्यक्ति कौन हैं? वह

कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, फिर वह दोनों उससे पूछते हैं? तुम्हारा धर्म क्या है? वह कहता है: हाय हाय! मुझे ज्ञात नहीं, तो पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: उसने असत्य बात कही, उसके हेतु नरक का बिछावना बिछा दो, उसके हेतु नरक की ओर का द्वार खोल दो, तो उसकी तपन एवं विषैला वायु (लपट) आने लगती है, एवं उसकी क़ब्र संकीर्ण कर दी जाती है, यहां तक कि उसकी पसलियां इधर से उधर हो जाती हैं, फिर उसके निकट एक कुरूप व्यक्ति आता है, जो भद्दा वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से दुर्गंध फूटती रहती है, वह कहता है: तुझे बुरे यातना का शुभ समाचार दिया जाता है, यही वह दिवस है जिसका तुझे वचन दिया जाता था, वह कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा बुराइयों का संदेश लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा दुष्ट-कर्म हूं, वह कहता है ए पालनहार क़यामत प्रकट मत कर।

(इसे इमाम अहम ने मुसनद: ४/२८७ की एक लंबी हदीस में रिवायत किया है, इनके अतिरिक्त अबू दाऊद: ४७५३ ने भी रिवायत किया है एवं मुसनद के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को सहीह स्थित किया है एवं कहा है कि इसकी प्रतिलिपि करने वाले सहीह के रुवात हैं, इसी प्रकार अल्-बानी ने सहीहुल्-जामेअ़: १६७६ एवं मिशकातुल्- मसाबीह: १६३० में इसे सहीह कहा है।)●मृत्यु से क़ब्र में प्रश्न किए जाने का तीसरा साक्ष्य: सहीह बुख़ारी की यह रिवायत है, आ़इशा रज़ि अल्लाहु अन्हा उल्लेख करती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: ... मुझ पर यह वह्य की गई है

कि तुम लोगों का क़ब्र में परिक्षण लिया जाएगा, दज्जाल जैसी परीक्षा (आज़माइश) के आस-पास। तुम में से प्रत्येक के निकट (अल्लाह के देवदूत) भेजे जाएंगे एवं उससे कहा जाएगा: तुम्हारा उस व्यक्ति (अर्थात मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के संबंध में क्या विचार है? फिर मोमिन अथवा विश्वासी व्यक्ति कहेगा: मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के सत्य दूत हैं, वह हमारे निकट स्मृति-चिन्ह एवं दिशा-निर्देश का प्रकाश लेकर आए, हमने (उसे) स्वीकार किया, विश्वास किया एवं (आपकी) आज्ञा की। फिर उससे कहा जाएगा: तू सो जा, तू एक पुण्य-कर्म करने वाले पुरुष की स्थिति में है एवं हमें ज्ञात है कि तू विश्वासी है, और प्रत्येक स्थिति में (बह्र हाल) पाखंडी अथवा शंकाशील व्यक्ति मुझे याद नहीं की असमा ने है कौन सा शब्द प्रयोग किया, (जब उस से प्रश्न किया जाएगा) तो वह कहेगा: मुझे (कुछ भी) ज्ञात नहीं, मैंने लोगों से जो कहते हुए सुना वह मैंने भी कह दिया। [इसे बुख़ारी: १०५३ ने रिवायत किया है, (मोमिन अथवा विश्वासी) (पाखंडी अथवा शंकाशील) में शंका हिशाम बिन उ़रवह से आया है।]

यह तीनों हदीसें है इस बात पर साक्ष्य हैं कि मृत्यु व्यक्ति से क़ब्र में प्रश्न किया जाएगा, परंतु अल्लाह तआ़ला विश्वासी को स्थिरता प्रदान करेगा एवं उसे सहीह उत्तर देने की शक्ति देगा, चाहे वह पापी ही क्यों न हो, अल्लाह का कथन है:

﴿يُثَبِّت الله الذين آمنوا بالقول الثابت في الحياة الدنيا وفي الآخرة﴾

अर्थात: अल्लाह तआ़ला विश्वावासियों को पक्की बात के साथ शक्तिशाली रखता है, सांसारिक जीवन में भी एवं प्रलोक में भी।

रही बात काफ़िरों एवं पाखंडियों की तो वो प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाएंगे इस कारणवश अल्लाह तआ़ला उनके साथ वही व्यवहार करेगा जिसके वो पात्र हैं।

●ए मोमिनो! प्रलय के दिवस में विश्वास रखने के संबंध में द्वितीय विषय है; क़ब्र की यातना एवं उसका उपहार, इसका साक्ष्य ज़ैद बिन साबित रज़ि अल्लाहु अन्हू की यह हदीस है, वह रिवायत करते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "यदि यह संदेश ना होता कि तुम (अपने मृत्यु गण) का अंतिम संस्कार नहीं करोगे, तो मैं अल्लाह से प्रार्थना करता क़ब्र के जिस प्रकोप (की ध्वनियां) मैं सुन रहा हूं वह तुम्हें भी सुना दे, फिर आपने अपना मुखड़ा हमारी ओर किया और फ़रमाया: "अग्नि के प्रकोप से अल्लाह का शरण मांगो।" सब ने कहा: हम अग्नि के प्रकोप से अल्लाह के शरण में आते हैं, फिर आपने फ़रमाया: "क़ब्र की यातना से अल्लाह का शरण मांगो।" सब ने कहा हम क़ब्र के प्रकोप से अल्लाह के शरण में आते हैं, फिर आपने फ़रमाया: "प्रत्येक प्रकार के परीक्षणों से; जो उस में प्रदर्शित हैं एवं जो अदृश्य हैं अल्लाह का शरण मांगो"। सब ने कहा: हम परीक्षणों से; जो प्रदर्शित हैं एवं अदृश्य हैं अल्लाह के शरण में आते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "दज्जाल के परीक्षणों से अल्लाह का शरण मांगो"।

(मुस्लिम: २८६७)

अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहु अन्हू से मरवी है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: जब तुम में से कोई नमाज़ में तशह्हुद पढ़े तो चार चीज़ों से शरण मांगे:

«اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ»

अर्थात: हे अल्लाह! मैं तेरा शरण मांगता हूं नरक एवं क़ब्र की यातना से, जीवन एवं मृत्यु की यातना से, और दज्जाल के परीक्षण से"।

इसे बुख़ारी: १३७७ एवं मुस्लिम: ५८८ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)●अल्लाह के दासो! क़ब्र की यातना दो प्रकार के व्यक्तियों को दी जाएगी, पापी विश्वासियों एवं काफ़िरों को, पापी विश्वासियों का साक्ष्य: अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की यह हदीस है, वह कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का गुज़र दो क़ब्रों के पास से हुआ, इन दोनों क़ब्रों के मृत्यु को यातना दी जा रही है, एवं यह भी किसी महत्वपूर्ण कारण से नहीं हो रहा है, फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हां! इन में से एक व्यक्ति चुग़ली करता था एवं द्वितीय वह व्यक्ति है जो मूत्र से बचने में सतर्क (अर्थात मूत्र के छींटे से बचने में लापरवाही करता था जिस कारणवश उसके वस्त्र मूत्र की गंदगी से अपवित्र हो जाते थे।) नहीं रहता था।

(इसे बुख़ारी: २१६ एवं मुस्लिम: २९२ ने रिवायत किया है एवं उल्लेख किए गए शब्द मुस्लिम के हैं।)

ज्ञात हुआ कि चुग़ली खाना एवं मूत्र से ना बचना महा पापों में से है, एवं यह दोनों पापी अपने पाप के अनुसार क़ब्र में यातना के योग्य हैं ताकि उन्हें उनके पापों से पवित्र एवं स्वच्छ किया जा सके, इसी प्रकार इनके अतिरिक्त और भी पाप हैं जिनके अनुसार (मनुष्य को) क़ब्र में यातना दी जाएगी, क्योंकि क़ब्र यातना एवं उपहार का स्थान है।

●काफ़िरों को क़ब्र की यातना देने पर दूसरा साक्ष्य अल्लाह तआ़ला का कथन है:

﴿وَلَوْ تَرَى إِذِ الظَّالِمُونَ فِي غَمَرَاتِ الْمَوْتِ والملائكة بَاسِطُوا أَيْدِيهِمْ أَخْرِجُواْ أَنفُسَكُمُ **الْيَوْمَ تُجْزَوْنَ** عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنتُمْ تَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنتُمْ عَنْ آيَاتِهِ تَسْتَكْبِرُونَ﴾

अर्थात: एवं यदि आप उस समय देखें जब ये क्रूर व्यक्तिगण मृत्यु की कठिनाइयों में होंगे एवं देवदूत अपने हाथ बढ़ा रहे होंगे कि हां अपनी प्राणें निकालो। आज तुम्हें निरादर यातना दी जाएगी, वह इस कारणवश की तुम अल्लाह के संबंध में असत्य बातें कहते थे एवं उसके श्लोकों के साथ अभिमान करते थे।

●इस कारणवश अल्लाह का कथन (ٱلۡيَوۡمَ تُجۡزَوۡنَ**) इस बात पर साक्ष्य है कि उन्हें तुरंत ही यातना दी जाएगी।**

●अल्लाह ने फ़िरऔनियों के संबंध में फ़रमाया:

﴿النَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آل فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾

अर्थात: यह अग्नि है जिसके समक्ष प्रत्येक प्रातः एवं सांय ये लाए जाते हैं, एवं जिस दिन प्रलय प्रकट होगा, (आदेश होगा कि) फ़िरऔनियों को अत्यंत कठोर यातना में डालो।

अल्लाह का कथन: ﴿غدوا وعشيا﴾ **का अर्थ यह है कि प्रलय के प्रकट होने से पूर्व। क्योंकि इसके पश्चात फ़रमाया:**

﴿ وَيَوْمَ تَقُومُ السَّاعَةُ أَدْخِلُوا آل فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ﴾

इस कारणवश प्रलय के दिन से पूर्व की यातना की एवं उसके पश्चात की यातन में अंतर का उल्लेख किया गया है।●रही बात क़ब्र के उपहारों की तो यह सत्य विश्वासियों हेतु है, अल्लाह का कथन है:

﴿إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَــــزلُ عَلَيْهِمُ الْمَلائِكَةُ أَلاَّ تَخَافُوا وَلا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ﴾

अर्थात: (वास्तव में) जिन व्यक्तिगण ने कहा हमारा पालनहार अल्लाह है, फिर उसी पर स्थित रहे, उसके निकट देवदूत (यह कहते हुए आते हैं कि कुछ भी भय एवं शोक ना करो) बल्कि उस स्वर्ग का शुभ संदेश सुन लो जिसका तुम्हें वचन दिया गया।

इस श्लोक से तर्क का आधार अल्लाह का यह कथन है जो स्वर्गदूतों द्वारा कहा गया: (وَأَبۡشِرُوا۟ بِٱلۡجَنَّةِ**) (अर्थात: स्वर्ग का शुभ संदेश सुन लो।) यह उस समय कहा जाता है जब आत्मा निकाली जाती है। इस कारणवश मृत्यु के**

समय आत्मा निकालते हुए यह शुभ संदेश देना उपहारस्वरूप माना जाता है। और यही अस्थान तर्क का आधार है।

●क़ब्र में मिलने वाले उपहारों पर क़ुरआन से साक्ष्य अल्लाह का कथन है:

﴿**فَلَوْلا إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُومَ** * وَأَنتُمْ حِينَئِذٍ تَنظُرُونَ * وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنكُمْ وَلَكِن لاَّ تُبْصِـرُونَ * فَلَوْلا إِن كُنتُمْ غَيْرَ مَدِينِينَ * تَرْجِعُونَهَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ * فَأَمَّا إِن كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِينَ * فَرَوْحٌ وَرَيْحَانٌ وَجَنَّةُ نَعِيمٍ﴾

अर्थात: जबकि आत्मा कंठ तक पहुंच जाए, और तुम उस समय नेत्रों से देखते रहो, हम उस व्यक्ति की तुलना में तुम से अधिक निकट रहते हैं, परंतु तुम दर्शन नहीं कर सकते, इस कारणवश यदि तुम किसी के अधीन नहीं हो एवं तुम अपने प्रवचन में सत्य हो तो (थोड़ा) तुम इस आत्मा को लौटाओ, जो कोई अल्लाह के द्वार के निकट होगा उसके हेतु शांति, आहार एवं शांतिपूर्ण स्वर्ग है।

●इस श्लोक से तर्क का आधार यह है कि (जब आत्मा कंठ तक पहुंच जाए) उस समय शांति आहार एवं सुखो वाले स्वर्ग का शुभ संदेश दिया जाता है, जैसा कि उपरोक्त श्लोक से ज्ञात होता है, यह इस बात का साक्ष्य है कि मनुष्य को जो उपहार मिलने वाला होता है मृत्यु के समय से ही वह प्रारंभ हो जाता है एवं यह क़ब्र का सर्वप्रथम उपहार है।

●क़ब्र में मिलने वाले उपहारों पर क़ुरआन से एक साक्ष्य यह भी है अल्लाह का कथन है:

﴿كذلك يجزي الله المتقين * الذين تتوفاهم الملائكة طيبين يقولون سلام عليكم **ادخلوا الجنة** بما كنتم تعملون﴾

अर्थात: धर्मनिष्ठ व्यक्तियों को अल्लाह इसी प्रकार बदला देता है, वो जिनकी आत्माएं देवदूत इस परिस्थिति में निकालते हैं कि वो पवित्र एवं स्वच्छ हों, कहते हैं कि तुम्हारे लिए तो शांति ही शांति है, जाओ स्वर्ग में अपने उन पुण्य-कर्मों के बदले जो तुम करते थे।

●इस श्लोक से तर्क का आधार यह है कि अल्लाह देवदूतों के माध्यम से विश्वासियों को उनकी मृत्यु के समय कहता है (ٱدۡخُلُواْ ٱلۡجَنَّةَ**) (स्वर्ग में प्रवेश कर जाओ।)**

●आत्मा निकलने से पूर्व ही विश्वासियों को उपहार का शुभ संदेश दे दिया जाता है, इसका साक्ष्य अल्लाह का यह कथन है:

﴿يا أيتها النفس المطمئنة * ارجعي إلى ربك راضية مرضية * فادخلي في عبادي * وادخلي جنتي﴾.

अर्थात: ए संतुष्ट आत्मा! तू अपने पालनहार की ओर चल इस स्थिति में की तुम अल्लाह से एवं वो तुम से प्रसन्न हो, इस कारणवश तुम मेरे विशेष दासों में प्रवेश कर जा, एवं मेरे स्वर्ग में चली जा।

●हदीस से इस बात पर साक्ष्य कि आत्मा निकलने से पूर्व ही विश्वासियों को उपहार का शुभ संदेश दे दिया जाता है, बराअ बिन आ़ज़िब रज़ि अल्लाहु अन्हू की उपरोक्त हदीस है, उसमें उल्लेख हुआ है कि दो देवदूत विश्वासी से कहते हैं उस समय जब वह क़ब्र में प्रश्नों का सफ़लतापूर्वक उत्तर दे

देता है, (ए शांतिपूर्ण आत्मा! अल्लाह की क्षमा/मुक्ति एवं प्रसन्नता की ओर चली जा।) इस कारणवश आत्मा प्रसन्न हो जाती है एवं सरलता पूर्वक शरीर से निकल जाती है, फिर फ़रमाया: फिर पुकारने वाला आकाश से पुकारता है: मेरे दास ने सत्य कहा इस कारणवश उसके हेतु स्वर्ग का बिछावना बिछा दो, उसे स्वर्ग का वस्त्र पहना दो एवं उसके हेतु स्वर्ग की ओर का एक द्वार खोल दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं: "फिर स्वर्ग का वायु एवं उसकी सुगंध आने लगती है, एवं दृष्टि की अंतिम सीमा तक उसके क़ब्र को विशाल कर दिया जाता है।" फ़रमाया: उसके निकट एक अति सुंदर मनुष्य आता है, वह सुंदर वस्त्र पहना हुआ होता है, उसके शरीर से सुगंध फूट रही होती है, वह कहता है: "तुम्हारे हेतु ऐसे उपहारों का शुभ समाचार है जिस से तुम्हें प्रसन्नता प्राप्त होगी, यही वह दिवस है जिसका तुम्हें वचन दिया जाता था, वह से कहता है: तुम कौन हो? तुम्हारा मुखड़ा लाभों का उपहार लाने वाला ज्ञात होता है, वह कहता है: मैं तुम्हारा पुण्य-कर्म हूं। वह व्यक्ति कहता है: हे पालनहार! क़यामत प्रकट कर दे ताकि मैं अपने परिवार एवं अपने धन संपत्ति की ओर लौट जाऊं।

(इसे इमाम अहम ने मुसनद: ४/२८७ की एक लंबी हदीस में रिवायत किया है, इनके अतिरिक्त अबू दाऊद: ४७५३ ने भी रिवायत किया है एवं मुसरत के शोधकर्ताओं ने इसकी सनद को सहीह स्थित किया है एवं कहा है कि इसकी प्रतिलिपि करने वाले सहीह के रुवात हैं, इसी प्रकार अल्-बानी ने

सहीहुल्-जामेअ़: १६७६ एवं मिशकातुल्- मसाबीह: १६३० में इसे सहीह कहा है।)

●अल्लाह के दासो! क़ब्र के परीक्षणों उसकी यातना एवं उपहार को स्थित करने हेतु किताब-व-सुन्नत के यह कुछ साक्ष्य हैं जिनका उल्लेख हुआ, इसका विरोध केवल भटका हुआ व्यक्ति कर सकता है।

●अल्लाह तआ़ला हमें एवं आपको सर्वश्रेष्ठ क़ुरआन के लाभों से लाभार्थी करे, मुझे एवं आपको क़ुरआन के श्लोकों एवं बुद्धिमत्ता पर आधारित सलाहों से लाभार्थी करे, मैं अपनी यह बात कहते हए अपने लिए एवं आप संपूर्ण के लिए अल्लाह से क्षमा मांगता हूं, आप भी उस से क्षमा प्रार्थी हों। निः संदेह वह अधिक क्षमा स्वीकार करने वाला एवं अधिकतम दया करने वाला है।

द्वितीय उपदेश:

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، أما بعد**!**

प्रशंसा ओं के पश्चात!

अल्लाह के दासो! अल्लाह से भयभीत रहे एवं यह ज्ञात रखें कि प्रलय के दिन में विश्वास रखने के अनेक लाभ हैं (उपदेश का यह पाठ इब्न-ए-उ़सैमीन रहिमहुल्लाह की पुस्तक: शरहुसलासतिल्-उसूल, पृष्ठ संख्या: १०५ से प्रतिलिपि की गई है।) उनमें से कुछ महत्वपूर्ण लाभ निम्नलिखित हैं:

१. उस दिन के उपहार की आशा में आज्ञाकारी की ओर आकर्षित होना एवं उसके हेतु प्रबंध करना।

२. उस दिन के यातना की भय से पाप करने एवं उस पर सहमति से वंचित रहना।

३. विश्वासी संसार के जिस उपहार से वंचित रहते हैं उनकी भरपाई हेतु प्रलय के दिन के उपहार एवं सवाब की आशा करके मन को संतुष्ट करना।

४. अल्लाह की न्याय से अवगत होना वह इस प्रकार कि अल्लाह उनके कर्मों का बदला देगा, यदि कर्म पुण्य का होगा तो लाभ भी अच्छा मिलेगा एवं यदि कर्म दुष्ट होगा तो उसका बदला भी बुरा होगा।

५. अल्लाह की बुद्धिमत्ता का ज्ञान रखना इस प्रकार कि अल्लाह ने दासों को निराधार प्रकट नहीं किया, बल्कि उन्हें महान बुद्धिमत्ता के कारण प्रकट किया जो कि उसकी उपासना है, वह इस प्रकार कि वो संपूर्ण आज्ञाओं एवं उपासनाओं को पूरा करें, एवं प्रत्येक प्रकार के अवैध चीज़ों से वंचित रहें, फिर अल्लाह तआ़ला इस आधार पर प्रलोक में उनका लेखांकन करने वाला है।

●हे अल्लाह! हम तेरा शरण चाहते हैं नरक एवं क़ब्र की यातना से, जीवन एवं मृत्यु की यातना से और दज्जाल के परीक्षण से।

●हे अल्लाह! हम तुझसे स्वर्ग की मांग करते हैं एवं ऐसी कथनी और करनी की जो स्वर्ग से निकट कर दे, एवं नर्क से तेरा शरण चाहते हैं एवं ऐसी ही कथनी और करनी से जो नरक से निकट कर दे।

●हे अल्लाह! हमें अपना प्रेम एवं उस प्रत्येक कर्म का प्रेम प्रदान कर जो हमें तुझ से निकट कर दे।

●हे अल्लाह हम ने स्वयं को बहुत ही हानि पहुंचाया है यदि तू क्षमा ना करेगा एवं हम पर कृपा नहीं करेगा तो वास्तव में हम हानि प्राप्त करने वाले हो जाएंगे।

●हे अल्लाह! हमारे संपूर्ण पापों को क्षमा कर दे, चाहे वो बड़ा हो अथवा छोटा, पूर्व का हो अथवा पश्चात का एवं प्रदर्शित हो अथवा अदृश्य।

●हे हमारे पालनहार हमें सांसारिक जीवन में पुण्य दे एवं प्रलय में भलाई प्रदान कर और नरक की यातना से हमें सुरक्षित रख।

लेखकः

मजिद बिन सुलेमान अलरसी

अनुवादः

तारिक़ बदर

binhifzurrahman@gmail.com